



facebook.com/
thebharatshri



twitter.com/
thebharatshri



website
thebharatshri



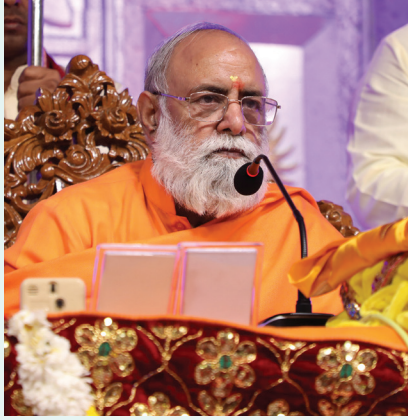
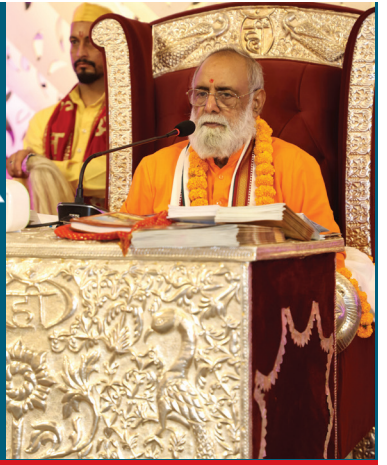
राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 30 जून 2025 • वर्ष 6 • अंक 49 • मूल्य: 5 रुपये

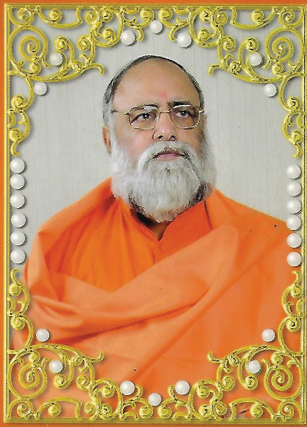
हजारों श्रद्धालुओं ने किया अनुभव साझा



परम पूज्य सदगुरुदेव जी ने कहा कि सभी महान संतों ने मिलकर जो मां दुर्गा की सिद्ध प्रतिमा भेंट की, उससे बढ़कर इस दुनिया में कुछ भी नहीं है। ये साक्षात मां दुर्गा हैं, जो इस संसार को पैदा करने वाली है, चन्द्रमा, सूरज, तारों को पैदा करने वाली है।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

भारत के अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन में भारत का गौरव

@ भारतश्री ब्यूरो

भारत के अंतरिक्ष अभियान में एक और महत्वपूर्ण सफलता जुड़ गई है। ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला इस समय अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (ISS) में मौजूद हैं। वे भारत के दूसरे ऐसे अंतरिक्ष यात्री हैं जो अंतरिक्ष में गए हैं, साथ ही वे पहले ऐसे भारतीय हैं जो आईएसएस तक पहुंचे हैं। यह हमारे देश के लिए गर्व की बात है क्योंकि अंतरिक्ष में जाना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसमें भौतिक और मानसिक दोनों तरह की कड़ी मेहनत लगती है।

भारतीय वायु सेना में ग्रुप कैप्टन हैं शुभांशु शुक्ला

शुभांशु शुक्ला भारतीय वायु सेना में ग्रुप कैप्टन हैं। उनके पास लड़ाकू विमान उड़ाने का लंबा अनुभव है। एक फाइटर पायलट के रूप में उन्होंने कई कठिन प्रशिक्षण और मिशन पूरे किए हैं, जो उन्हें अंतरिक्ष यात्रा के लिए बेहद उपयुक्त बनाता है। अंतरिक्ष में माइक्रोग्रैविटी जैसी स्थितियों में काम करने के लिए उनकी पायलट ट्रेनिंग और उनकी कड़ी मेडिकल देखरेख ने उन्हें पूरी तरह फिट बनाया है।

मेडिकल फिटनेस और स्पेस सिकनेस

समाचार चैनल एनटीडीवी की रिपोर्ट के अनुसार, यूरोपियन फ्लाइट सर्जन डॉ. ब्रिगिट गोडार्ड ने बताया है कि शुभांशु शुक्ला अंतरिक्ष यात्रा के लिए मेडिकल तौर पर पूरी तरह फिट हैं। हालांकि, उन्होंने बताया कि शुभांशु को कुछ हद तक सिर में भारीपन और स्पेस सिकनेस की समस्या हुई है। स्पेस सिकनेस यानी अंतरिक्ष में मतली और चक्कर आना एक सामान्य समस्या है क्योंकि शरीर यहां के वातावरण के साथ तालमेल बिठाने में समय लेता है।

डॉ. गोडार्ड के मुताबिक, शुभांशु के स्वास्थ्य पर नजर रखने वाले उनके 'फैमिली डॉक्टर' हैं, जो उनके स्वास्थ्य की लगातार जांच कर रहे हैं। यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी समस्या को तुरंत पहचाना और ठीक किया जा सके।

फ्लाइट सर्जन क्या होता है?

अक्सर लोग सोचते हैं कि फ्लाइट सर्जन एक सर्जन



होते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। डॉ. ब्रिगिट गोडार्ड ने बताया कि फ्लाइट सर्जन असल में डॉक्टर होते हैं जो अंतरिक्ष यात्रियों की स्वास्थ्य देखभाल करते हैं। वे मिशन के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों की सेहत की निगरानी करते हैं और किसी भी मेडिकल समस्या का समाधान टेलीमेडिसिन के माध्यम से करते हैं। टेलीमेडिसिन का मतलब है कि वे दूर से ही वीडियो कॉल या अन्य तकनीक के जरिए मरीज की जांच और सलाह देते हैं।

हर अंतरिक्ष यात्री के पास अपना एक फैमिली डॉक्टर होता है, जो उनकी मेडिकल जरूरतों को समझता है और मिशन के दौरान स्वास्थ्य की देखरेख करता है। भारतीय वायु सेना ने डॉ. पुण्यश्लोक बिस्वाल को शुभांशु शुक्ला का फैमिली डॉक्टर नियुक्त किया है। डॉ. बिस्वाल स्पेस मेडिसिन विशेषज्ञ हैं और वे लंबे समय से शुभांशु के स्वास्थ्य पर नजर रख रहे हैं।

अंतरिक्ष यात्रा के दौरान स्वास्थ्य की चुनौतियां

अंतरिक्ष में जाना आसान काम नहीं है। चाहे यात्रा कितनी भी छोटी क्यों न हो, इसका असर मानव शरीर और मन दोनों पर पड़ता है। अंतरिक्ष में कुछ खास चीजें होती हैं जो पृथ्वी पर नहीं होतीं। सबसे बड़ी चुनौती है "माइक्रोग्रैविटी" की स्थिति, यानी गुरुत्वाकर्षण लगभग न

के बराबर हो जाता है।

इस स्थिति में शरीर के तरल पदार्थ (फ्लूइड) शरीर के निचले हिस्सों से ऊपर की ओर स्थानांतरित हो जाते हैं, जिससे शरीर का संतुलन बदल जाता है। इससे "फ्लूइड शिफ्ट" की समस्या होती है, जो सिर भारी होने का कारण बन सकती है। इसके अलावा, अंतरिक्ष यात्रियों को हड्डियों की घनत्व कम होने (बोन डेंसिटी लॉस) की समस्या भी होती है क्योंकि वे वजन रहित वातावरण में होते हैं।

स्पेस मोशन सिकनेस भी एक आम समस्या है, जिसमें मतली, चक्कर आना और उल्टी जैसे लक्षण होते हैं। शुभांशु शुक्ला को भी शुरुआत में ये समस्याएं हुईं, लेकिन उनकी फिटनेस और विशेषज्ञ डॉक्टरों की देखरेख के कारण वे जल्दी ठीक हो रहे हैं।

शुभांशु शुक्ला की खास ट्रेनिंग

शुभांशु की ट्रेनिंग उनकी सफलता की कहानी में एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक फाइटर पायलट के रूप में उनका अनुभव और कड़ी मेडिकल देखरेख ने उन्हें अंतरिक्ष की चुनौती के लिए तैयार किया है। लड़ाकू विमान उड़ाने वाले पायलट को तेज़ निर्णय लेने, तनाव में काम करने और शरीर को असामान्य परिस्थितियों के लिए तैयार करने की आदत होती है।



ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



न्यूयॉर्क में भारतीय मूल का पहला मेयर बनने की ओर एक कदम आर्या की कहानी बनी उदाहरण



@ रिकू विश्वकर्मा

जोहरान ममदानी अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में यह शख्स पहली बार कोई भारतीय मूल का मेयर बनने जा रहा है। उन्होंने मेयर पद के लिए प्राइमरी चुनाव में एंड्रियो कुआमो को हराया। इसके बाद नवंबर में मेयर पद के लिए फाइनल चुनाव होंगे। अगर ममदानी जीत जाते हैं तो न्यूयॉर्क के वो पहले मुस्लिम और साउथ एशियन मेयर होंगे। इन दिनों उनकी एक पोस्ट सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही है। यह पोस्ट 2020 की है जिसमें उन्होंने केरल के तिरुवनंतपुरम की 21 साल की मेयर आर्या राजेंद्रन का जिक्र किया था। इसमें उन्होंने कहा था कि न्यूयॉर्क को आर्या जैसी मेयर की ही जरूरत है।

कौन हैं आर्या राजेंद्रन?

जोहरान खुद को एक समाजवादी नेता के तौर पर देखते हैं, लेकिन प्राइमरी चुनाव जीतने के बाद ही उनकी आलोचना की जा रही है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, न्यूयॉर्क के मौजूदा मेयर एरिक एडम्स से लेकर उनकी अपनी पार्टी के डेमोक्रेटिक सहयोगी तक उन्हें कम्युनिस्ट कह रहे हैं। अब उनका एक पोस्ट वायरल हो रहा है और यह पोस्ट सीपीआई(एम) यानी कि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सिस्ट), पुडुचेरी का है। उन्होंने यह पोस्ट सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर 2020 में किया था। जोहरान ने इस पोस्ट में एक सवाल पूछा था। उन्होंने पूछा कि न्यूयॉर्क को अभी किस तरह के मेयर की जरूरत है? उन्होंने जवाब में आर्या राजेंद्रन की कुछ फोटो शेयर की।

आर्या राजेंद्रन कम्युनिस्ट पार्टी से ताल्लुक रखती हैं। 2020 में केरल के मुदावन मुगल वार्ड से वह चुनी

गई थीं और उन्होंने 21 साल की उम्र में भारत की सबसे कम उम्र की मेयर बनकर इतिहास रचा था। उन्होंने देवेंद्र फडणवीस के रिकॉर्ड को भी तोड़ा। देवेंद्र फडणवीस 27 साल की उम्र में मेयर बने थे। राजेंद्रन को मेयर बनने पर कमल हासन, शशि थरूर और गौतम अडानी जैसे बड़े-बड़े नामों ने भी बधाई दी थी।

CPI(M) के नेता हैं आर्या

वो सीपीआई(एम) की नेता हैं। 2020 के केरल स्थानीय निकाय चुनावों में वो मुदावन मुगल वार्ड से

चुनी गईं और उन्होंने मैथ्स में ग्रेजुएशन किया है। उनकी राजनीति में शुरुआत काफी कम उम्र में हो गई थी। उन्होंने पांचवी कक्षा में ही सीपीआई(एम) की बाल संगठन 'बाल संगम' से जुड़कर सफर शुरू किया और आगे चलकर वह इसकी राज्य अध्यक्ष भी बनीं।

राजेंद्रन स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) की राज्य समिति की सदस्य भी रह चुकी हैं। इसके अलावा वह तिरुवनंतपुरम के चाला इलाके में सीपीआई(एम) की एरिया कमिटी में भी काम कर चुकी हैं। वो सीपीआई(एम) के विधायक और केरल

विधानसभा के सबसे युवा सदस्य सचिन देव की पत्नी हैं।

2023 में राजेंद्रन उस समय देश भर में चर्चा में आईं जब उनका 1 महीने का बच्चा वह अपने साथ ऑफिस में काम करते हुए ले आईं और उनका यह फोटो वायरल हो गया। इस फोटो ने कामकाजी माताओं पर एक नई बहस भी छेड़ी।

2024 में उन्हें सीपीआई(एम) की तिरुवनंतपुरम जिला समिति का सदस्य चुना गया। मेयर बनने के बाद राजेंद्रन ने शहर में कचरा प्रबंधन और स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता दी। कोविड-19 महामारी के दौरान उन्होंने शहरी समस्याओं पर खुलकर बात की। उन्होंने वैज्ञानिक तरीके से कचरे के निपटान को लेकर ज्यादा से ज्यादा लोगों को जागरूक करने पर जोर दिया। 24 घंटे खुले रहने वाले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की पैरवी की, खासकर समाज के कमजोर वर्गों के लिए।

पिता हैं इलेक्ट्रिशियन

राजेंद्रन के पिता एक इलेक्ट्रिशियन हैं और उनकी मां एक LIC एजेंट हैं। उनके परिवार के सभी लोग कम्युनिस्ट पार्टी के समर्थक हैं। अब तक राजेंद्रन के कार्यकाल को लेकर किसी भी तरह का विवाद नहीं रहा है। हालांकि, एक बार उन पर बस रोकने और ड्राइवर से बदसलूकी का आरोप लगा था। राजेंद्रन केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन और स्वास्थ्य मंत्री के.के. शैलजा को अपनी प्रेरणा बताती हैं। इसके अलावा उनका मानना है कि वह पार्टी की आदर्श कॉमरेड में हमेशा बनी रहेंगी क्योंकि उनके पिता ने उन्हें बचपन से यही सीख दी है कि व्यक्ति नहीं, पार्टी सबसे ऊपर है। इन्हीं मेयर की कहानी ममदानी ने अपने ट्विटर पर डाली थी, जो अब नए सिरे से वायरल हो रही है। लोगों का मानना है कि वह मेयर चुनाव लड़ने के लिए रणनीति बहुत पहले से ही बना रहे थे।



मंदिर, प्रसाद और राजनीति

क्या ममता साध रही हैं हिंदू वोट?

@ आनंद मीणा

पश्चिम बंगाल में भगवान जगन्नाथ के मंदिर के बाद अब प्रसाद को लेकर विवाद हो गया है। बीजेपी आरोप लगा रही है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पहले जगन्नाथ मंदिर बनाकर हिंदू वोट साधने की कोशिश की और अब सरकारी पैसे का दुरुपयोग कर जगन्नाथ प्रसाद बांट रही हैं, जो शुद्ध भी नहीं है। बीजेपी नेता इसे हलाल प्रसाद कह रहे हैं और इसका विरोध कर रहे हैं।

जगन्नाथ प्रसाद विवाद है चर्चा में



जगन्नाथ धाम विवाद के बाद अब ये जगन्नाथ प्रसाद विवाद क्या है? इसे लेकर बीजेपी और टीएमसी आमने-सामने क्यों आ गई है? ममता बनर्जी सरकार ने वहां की बीच सिटी दीघा में भगवान जगन्नाथ का भव्य मंदिर बनवाया है, 250 करोड़ की लागत से और 30 अप्रैल को इसका उद्घाटन किया था। तभी से यह मंदिर बीजेपी और टीएमसी के बीच विवाद का केंद्र बना हुआ है।

पहला विवाद इसके नाम को लेकर हुआ। पहले तो विपक्षी दल बीजेपी ने आपत्ति दर्ज कराई, फिर उड़ीसा की बीजेपी सरकार ने भी पत्र लिखकर मंदिर के नामकरण के मुद्दे पर आपत्ति दर्ज की थी। इस मंदिर का नाम है जगन्नाथ धाम। इसके बाद पूरी के मंदिर की लकड़ी से यहां की प्रतिमा बनाए जाने को लेकर भी आरोप लगे। और अब विवाद भगवान जगन्नाथ के प्रसाद तक पहुंच गया है।

ममता बनर्जी द्वारा दीघा में बनाए गए जगन्नाथ धाम को पश्चिम बंगाल में बीजेपी के उग्र हिंदुत्व राजनीति का कार्ड बताया जा रहा है। हालांकि तृणमूल कांग्रेस इन आरोपों का खंडन करती है। इस मंदिर को लेकर जो नया विवाद है, वह इसके प्रसाद को लेकर है। ममता बनर्जी सरकार ने इस मंदिर के प्रसाद को लेकर एक नई योजना शुरू की है 'दुआरे राशन योजना'।

उसके मुताबिक, पश्चिम बंगाल सरकार जगन्नाथ धाम का प्रसाद राज्य के 1 करोड़ 40 लाख घरों तक पहुंचाएगी। इस प्रसाद के बॉक्स के अंदर दो पारंपरिक मिठाइयां हैं। एक है पेड़ा और दूसरा है गांजा। इन प्रसादों पर खर्च आया है 42 करोड़ का और इस एक बॉक्स की कीमत है 20। लेकिन बीजेपी ने इस प्रसाद को लेकर आपत्ति दर्ज की है।

हिंदू श्रद्धालुओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ का लगा आरोप

बीजेपी नेता शुभेंदु अधिकारी ने इसे हलाल प्रसाद



“हर धर्म के लोगों को बांटा जा रहा है”

हिडको के अध्यक्ष और पश्चिम बंगाल के नगर विकास मंत्री फरहाद हकीम ने बीजेपी के आरोपों का जवाब दिया है। हकीम ने कहा है कि बीजेपी धार्मिक मुद्दे को राजनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर रही है। भगवान सबके हैं और उनका प्रसाद भी सबके लिए है। इसे हर धर्म के लोगों को बांटा जा रहा है, हर घर तक पहुंचाया जा रहा है। हलाल प्रसाद के आरोप का जवाब देते हुए कोलकाता में इसके प्रवक्ता राधा रमण दास कहते हैं कि मंदिर में भगवान को अर्पित किया गया करीब 300 किलो खोया सभी जीरो को भेजा गया। वहां उसमें और खोया मिलाकर प्रसाद तैयार किया गया और उसे ही पैकेट में डालकर बांटा जा रहा है।

लेकिन मामला सिर्फ इतना नहीं है। बीजेपी इस प्रसाद बांटने के अभियान को सरकारी पैसे के धार्मिक इस्तेमाल का आरोप भी लगा रही है। दीघा जगन्नाथ धाम के उद्घाटन के वक्त बीजेपी ने आपत्ति जताते हुए कहा था कि राज्य के सरकारी धन का इस्तेमाल किसी धार्मिक संस्थान के निर्माण के लिए नहीं किया जा सकता। कांग्रेस और टीएमसी ने भी इस मुद्दे पर तृणमूल कांग्रेस को घेरा था। ऐसे में टीएमसी ने सफाई देते हुए कहा है कि इस मंदिर का निर्माण सरकार ने स्थानीय लोगों की इच्छा का सम्मान करते हुए बनवाया था।

तृणमूल कांग्रेस के प्रवक्ता कुणाल घोष ने विपक्ष के आरोपों पर पलटवार करते हुए कहा है कि ममता अपने पूरे राजनीतिक करियर में धर्मनिरपेक्ष रही हैं।

ऐसे में उन पर हिंदुत्व की राजनीति करने का आरोप निराधार है। इस पूरे मामले पर पश्चिम बंगाल पर नजर रखने वाले राजनीतिक विश्लेषक विश्वनाथ चक्रवर्ती ने भी अपनी राय दी है। बीबीसी हिंदी से बात करते हुए विश्वनाथ चक्रवर्ती कहते हैं कि राज्य में हिंदुत्व की राजनीति तेज हो रही है। ममता ने अपनी छवि सुधारने के लिए और बीजेपी के आरोपों का जवाब देने के लिए इस मंदिर को बनवाया है।

का नाम देते हुए आरोप लगाया है। कहा है कि दीघा के मुस्लिमों की दुकान से प्रसाद लेकर इसे सभी धर्म के लोगों को बांटा जा रहा है। यह हिंदू श्रद्धालुओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ है। यह तृणमूल कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति का एक हिस्सा है। साथ ही शुभेंदु अधिकारी ने कहा

है कि स्थानीय दुकानदारों से मिठाई लेकर उसे प्रसाद के तौर पर बांटा जा रहा है। यह भी हिंदू धर्म का अपमान है।

बीजेपी आरोप लगा रही है कि ममता इस प्रसाद वितरण के जरिए अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में हिंदू वोटों को लुभाने की कोशिश कर रही

हैं। लेकिन तृणमूल कांग्रेस बीजेपी के इन सभी आरोपों का खंडन करती है। हिडको यांनी कि वेस्ट बंगाल हाउसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन, जिसने दीघा में जगन्नाथ धाम का निर्माण किया है, उन्हें ही इस प्रसाद वितरण की जिम्मेदारी मिली है।

अंतरिक्ष में भारत का परचम शुभांशु शुक्ला और पीएम मोदी की बातचीत

भारत के अंतरिक्ष यात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने 26 जून 2025 को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर कदम रखकर इतिहास रच दिया। 41 साल बाद अंतरिक्ष में पहुंचने वाले पहले भारतीय बनकर उन्होंने न केवल देश का गौरव बढ़ाया, बल्कि भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान में एक नया अध्याय जोड़ा। 28 जून 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुभांशु से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बातचीत की, जिसमें कई दिलचस्प और प्रेरणादायक बातें सामने आईं। इस लेख में हम इस बातचीत, शुभांशु की यात्रा के भारत को लाभ, उनकी 14 दिन की दिनचर्या, भोजन और मल व्यवस्था, और बीमार होने की स्थिति में प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानेंगे।

1. पीएम मोदी और शुभांशु की खास बातचीत: “शुभ” नाम, शुभ शुरुआत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार, 28 जून 2025 को शुभांशु शुक्ला से करीब 18 मिनट तक बात की। यह बातचीत न केवल एक औपचारिक संवाद थी, बल्कि इसमें हल्के-फुल्के पल और गहरे संदेश भी शामिल थे। पीएम मोदी ने कहा, “आपके नाम में भी ‘शुभ’ है और आपकी यात्रा नए युग का शुभारंभ है। आप भले ही धरती से 400 किलोमीटर दूर हों, लेकिन 140 करोड़ भारतीयों के दिलों के सबसे करीब हैं।” उन्होंने शुभांशु को बधाई दी और उनकी उपलब्धि को गगनयान मिशन का पहला अध्याय बताया।

शुभांशु ने पीएम को धन्यवाद देते हुए कहा, “आपके नेतृत्व में आज का भारत सपनों को साकार करने का मौका देता है। मैं बचपन में कभी नहीं सोच पाया था कि अंतरिक्ष यात्री बन सकता हूँ, लेकिन आज मैं अपने देश का प्रतिनिधित्व कर गर्व महसूस कर रहा हूँ।” उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष से भारत “भव्य” दिखता है और पृथ्वी पर कोई सीमाएं नहीं दिखतीं, जो एकता की भावना को जागृत करती है।

पीएम मोदी ने हल्के अंदाज में पूछा, “क्या आपने अपने साथियों को गाजर का हलवा खिलाया?” शुभांशु ने हंस्टे हुए जवाब दिया कि उन्होंने गाजर का हलवा, मूंग दाल का हलवा, और आमरस अपने साथ ले गए थे, जिसे उनके साथी अंतरिक्ष यात्रियों ने खूब पसंद किया। यह छोटा-सा पल भारत की संस्कृति को अंतरिक्ष तक ले जाने का प्रतीक बना।

मोदी ने शुभांशु को “होमवर्क” भी दिया। उन्होंने कहा, “हमें गगनयान मिशन को आगे बढ़ाना है, अपना स्पेस स्टेशन बनाना है, और चंद्रमा पर भारतीय अंतरिक्ष यात्री की लैंडिंग करानी है। आपके अनुभव इन मिशनों के लिए बहुत जरूरी होंगे।” इस बातचीत ने न केवल शुभांशु का हौसला बढ़ाया, बल्कि भारत के अंतरिक्ष सपनों को भी नई उड़ान दी।

2. शुभांशु की यात्रा: भारत के लिए गेम-चेंजर

शुभांशु शुक्ला की अंतरिक्ष यात्रा भारत के लिए कई



मायनों में महत्वपूर्ण है। वे Axiom-4 मिशन के तहत ISS पर पहुंचे, जो एक वाणिज्यिक मिशन है, लेकिन इसका प्रभाव भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम, खासकर गगनयान मिशन, पर गहरा होगा। शुभांशु इस मिशन में सात वैज्ञानिक प्रयोग कर रहे हैं, जिनमें से दो खास तौर पर स्वास्थ्य और कृषि क्षेत्र में क्रांति ला सकते हैं।

स्टेम सेल और मसल लॉस पर प्रयोग

शुभांशु ने बताया कि वे स्टेम सेल पर आधारित एक प्रयोग कर रहे हैं, जो अंतरिक्ष में शून्य गुरुत्वाकर्षण के कारण होने वाले मांसपेशियों के नुकसान को रोकने के लिए सप्लीमेंट की भूमिका की जांच करेगा। इसका फायदा न केवल अंतरिक्ष यात्रियों को होगा, बल्कि धरती पर बुजुर्गों में मांसपेशियों की कमजोरी को कम करने में भी मदद मिल सकती है। यह प्रयोग भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र में नई संभावनाएं खोल सकता है।

माइक्रोएलजी और फूड सिस्टम

दूसरा महत्वपूर्ण प्रयोग माइक्रोएलजी की रोशनी पर है, जो पोषक तत्वों से भरपूर है। शुभांशु ने कहा, “अगर यह प्रयोग सफल होता है, तो हम धरती पर खाद्य सुरक्षा को बढ़ा सकते हैं।” माइक्रोएलजी को तेजी से उगाने की तकनीक भविष्य में खाद्य उत्पादन में क्रांति ला सकती है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां खेती मुश्किल है।

गगनयान मिशन को मजबूती

शुभांशु का अनुभव भारत के महत्वाकांक्षी गगनयान मिशन के लिए बहुत जरूरी है। यह मिशन 2026 में भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन को लॉन्च करने की तैयारी कर रहा है। शुभांशु की ट्रेनिंग और ISS पर उनके अनुभव गगनयान के लिए तकनीकी और मानवीय दोनों पहलुओं में मदद करेंगे। पीएम मोदी ने कहा, “यह यात्रा विकसित भारत के सपने को तेज गति देगी।” इसके अलावा, भारत का अपना स्पेस स्टेशन बनाने और चंद्रमा पर अंतरिक्ष यात्री भेजने के लक्ष्य में भी शुभांशु का योगदान अहम होगा।



युवाओं के लिए प्रेरणा

शुभांशु ने युवाओं को संदेश दिया, “स्काई इज नेवर द लिमिट।” उनकी यात्रा ने देश के बच्चों और युवाओं में विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान के प्रति उत्साह बढ़ाया है। पीएम मोदी ने कहा कि चंद्रयान की सफलता के बाद बच्चों में अंतरिक्ष को लेकर जज्बा बढ़ा है, और शुभांशु की यात्रा इसे और मजबूत करेगी। यह भारत के भविष्य के वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष यात्रियों के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन है।

3. 14 दिन की दिनचर्या: अंतरिक्ष में जिंदगी कैसी? शुभांशु शुक्ला 14 दिन तक ISS पर रहेंगे, जहां उनकी दिनचर्या धरती से बिल्कुल अलग है। अंतरिक्ष में शून्य गुरुत्वाकर्षण के कारण हर छोटी-छोटी चीज एक चुनौती बन जाती है। उन्होंने पीएम मोदी को बताया, “आपसे बात करते वक्त मैंने अपने पैर बांध रखे हैं, वरना मैं उड़ने लगूंगा।” उनकी दिनचर्या में निम्नलिखित गतिविधियां शामिल हैं:

वैज्ञानिक प्रयोग

शुभांशु और उनकी टीम 60 से अधिक वैज्ञानिक प्रयोग करेंगे, जिनमें कैंसर अनुसंधान, डीएनए मरम्मत, और उन्नत निर्माण तकनीकों से जुड़े अध्ययन शामिल हैं। भारतीय वैज्ञानिकों ने उनके लिए सात खास प्रयोग डिजाइन किए हैं, जैसे स्टेम सेल और माइक्रोएलजी पर रिसर्च। ये प्रयोग दिन का बड़ा हिस्सा लेते हैं, क्योंकि अंतरिक्ष में परिणाम जल्दी मिलते हैं।

शारीरिक व्यायाम

शून्य गुरुत्वाकर्षण में मांसपेशियां और हड्डियां कमजोर हो सकती हैं। इसलिए शुभांशु रोजाना व्यायाम करते हैं। ISS पर खास मशीनें हैं, जैसे ट्रेडमिल और रेसिस्टेंस बैंड, जो अंतरिक्ष यात्रियों को फिट रखने में मदद करती हैं।

सूर्योदय और सूर्यास्त का अनुभव

शुभांशु ने बताया कि वे दिन में 16 सूर्योदय और 16 सूर्यास्त देखते हैं, क्योंकि ISS हर 90 मिनट में पृथ्वी की परिक्रमा करता है। यह अनुभव न केवल अचंभित करने

वाला है, बल्कि उनकी दिनचर्या को भी प्रभावित करता है।

माइंडफुलनेस और ध्यान

शुभांशु ने कहा कि अंतरिक्ष में माइंडफुलनेस और ध्यान बहुत मदद करते हैं। लॉन्च के दौरान तनावपूर्ण स्थिति में शांत दिमाग से बेहतर निर्णय लिए जा सकते हैं। यह उनकी मानसिक सेहत के लिए भी जरूरी है।

सोना और अन्य गतिविधियां

अंतरिक्ष में सोना एक बड़ी चुनौती है। शुभांशु ने बताया कि शून्य गुरुत्वाकर्षण में शरीर को बांधना पड़ता है, वरना वे उड़ने लगते हैं। वे स्लीपिंग बैग में सोते हैं, जो दीवारों से बंधा होता है। इसके अलावा, वे अपने अनुभवों को रिकॉर्ड करते हैं, जो भविष्य के मिशनों के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

4. भोजन और मल व्यवस्था: अंतरिक्ष में डाइट और वेस्ट मैनेजमेंट

अंतरिक्ष में भोजन और मल व्यवस्था धरती से बिल्कुल अलग है। शुभांशु ने अपनी बातचीत में इस बारे में कुछ रोचक जानकारी साझा की।

भोजन: भारतीय स्वाद अंतरिक्ष में

शुभांशु अपने साथ गाजर का हलवा, मूंग दाल का हलवा, और आमरस ले गए। उन्होंने बताया कि उनके साथी अंतरिक्ष यात्रियों—अमेरिका की पैगी व्हिटसन, पोलैंड के स्लावोज उज्जान्स्की, और हंगरी के टिबोर कापू—ने भारतीय व्यंजनों का स्वाद लिया और इसे बहुत पसंद किया। ISS पर भोजन ज्यादातर डिहाइड्रेटेड (सूखा हुआ) या प्री-पैकेज्ड होता है। अंतरिक्ष यात्री गर्म पानी डालकर इसे खाने लायक बनाते हैं। भोजन को छोटे पैकेट्स में रखा जाता है, ताकि वह उड़ न जाए।

मल व्यवस्था: हाई-टेक सॉल्यूशन

अंतरिक्ष में मल और यूरिन का प्रबंधन एक जटिल प्रक्रिया है। ISS पर एक खास टॉयलेट सिस्टम है, जो वैक्यूम टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करता है। मल को एक सीलबंद कंटेनर में स्टोर किया जाता है, जिसे बाद में विशेष अंतरिक्ष यानों के जरिए नष्ट किया जाता है। यूरिन को रिसाइकिल करके पीने योग्य पानी में बदला जाता है। यह सुनने में अजीब लग सकता है, लेकिन यह तकनीक अंतरिक्ष में पानी की कमी को दूर करती है। शुभांशु ने इस बारे में विस्तार से नहीं बताया, लेकिन यह सिस्टम ISS पर मानक है।

पानी और अन्य जरूरतें

पानी की सप्लाई सीमित होती है, इसलिए इसे रिसाइकिल किया जाता है। खाने-पीने की चीजें ऐसी होती हैं, जो हल्की हों और ज्यादा जगह न लें। शुभांशु और उनकी टीम को यह सुनिश्चित करना होता है कि वे भोजन और पानी का सही इस्तेमाल करें।

एक बूढ़े की कहानी और कट्टरता का सच

हिंदुस्तान की आजादी का क्लाइमेक्स चल रहा था। एक सयाने बूढ़े को मालूम था कि लोग कमीने हैं लेकिन फिर भी उसका मानना था कि इंसान बेसिकली भला होता है। अब उसे या तो वाकई लगता था कि सारी कहानियों का सुखांत होता है या फिर वो सारा सच जानकर भी इस भुलावे में रहना चाहता था कि मनुष्य के भीतर दुनिया बचा लेने की सदिच्छा हमेशा छिपी होती है। 15 अगस्त के पहले और बाद के कुछ महीनों ने उस बूढ़े को बहुत तेज़ बूढ़ा करना शुरू कर डाला। उसे होना भी था। इंसान का चोगा उतारकर लोग ज्यादा हिंदू- ज्यादा मुसलमान हो गए थे। उसे लगने लगा कि कुछ भी करके मरने से पहले देश बचा लूं, दुनिया बचा लूं, इंसानियत बचा लूं। इस चक्कर में वो अपनी जान भी ना बचा सका। बचानी उसे यूं भी नहीं थी मगर और बहुत से लोग चाहते थे कि वो बच जाए। बचा नहीं। शायद वो लोग अपनी खुशफ़रूमी बचाना चाहते थे। फिर कुछ दिन पहले उसके पड़पोते से मेरी बात हुई। वो बोला कि उस खूनी चादर को देख मेरा सीना चौड़ा हो जाता है। गोलियां तो उनका तमगा थीं। मैं भी मानता हूं कि थीं मगर वो तमगे मिल भी गए तो क्या? इंसान रहा तो बेशर्मा ही। आज तक कह रहा है कि बूढ़े को हिंदू ज्यादा पसंद थे, मुसलमान ज्यादा पसंद थे, नेहरू ज्यादा पसंद थे, अंग्रेज़ पसंद थे। उसे जो पसंद था सबको पता है, तुम्हें क्या पसंद है वो भी सबको पता है। नियति हम लोगों की ये है कि सब पता होकर भी वो होते देखने की मजबूरी है जो नहीं होने देना चाहते। बूढ़े को भी पता ही रहा होगा। समझदारों का समझदार था लेकिन क्या करता। हमारी तरह मजबूर था। दुनिया बस कट्टर हिंदू, कट्टर मुसलमानों, कट्टर ईसाइयों, कट्टर यहुदियों, कट्टर बौद्धों के भरोसे है कि ये कब तक मजबूत नहीं होते। जब तक नहीं होते तब तक वो खैर मना रहा था, हम भी मनाएं। लानत है।

नितिन ठाकुर

संवाद की राह पर धीमी लेकिन सकारात्मक प्रगति



@ अनुराग पाठक

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद का इतिहास लंबा और जटिल रहा है। दोनों देशों के बीच सीमा पर तनाव के कई दौर देखने को मिले हैं, जिनमें कुछ बार सीधे टकराव भी हुए। हालांकि, हाल के दिनों में इस विवाद को सुलझाने की दिशा में कुछ सकारात्मक संकेत मिले हैं, जो उम्मीद जगाते हैं कि बातचीत के जरिए इस समस्या को शांतिपूर्ण रूप से सुलझाया जा सकता है।

चीन की ओर से हाल ही में यह स्पष्ट किया गया कि भारत के साथ सीमा विवाद जटिल है और इसे हल करने में समय लगेगा। यह स्वीकार्यता इस बात की पुष्टि करती है कि दोनों पक्ष इस मुद्दे को केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं देख रहे, बल्कि इसके गहरे और जटिल पहलुओं को समझते हैं। चीन ने इस बात पर भी जोर दिया कि वह सीमा परिसीमन पर चर्चा करने और सीमा क्षेत्रों में शांति बनाए रखने के लिए तैयार है। यह एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संकेत है, क्योंकि लंबे समय से दोनों देशों के बीच शांति और स्थिरता बनाए रखना आवश्यक रहा है।

इसी कड़ी में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके चीनी समकक्ष डोंग जून के बीच किंगदाओ में हुए द्विपक्षीय संवाद ने एक बार फिर से आशा की किरण जगाई है। शंघाई सहयोग संगठन के सम्मेलन में दोनों नेताओं ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर शांति और सौहार्द बनाए रखने पर जोर दिया। यह बैठक यह दर्शाती है कि दोनों देश तनाव कम करने और समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए संवाद के रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं।

चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने बताया कि

सीमा मुद्दे को सुलझाने के लिए दोनों देशों ने विशेष प्रतिनिधि (एसआर) तंत्र की स्थापना की है, जिसके तहत 23 दौर की वार्ताएं भी हो चुकी हैं। यह निरंतर संवाद दोनों देशों के बीच विश्वास बहाली की दिशा में अहम कदम है। हालांकि, सीमा विवाद के समाधान में देरी की बात भी स्वीकार की गई है, जो यह दर्शाता है कि समस्या का समाधान सहज नहीं होगा और इसके लिए धैर्य और समर्पण की आवश्यकता है।

पिछले साल दिसंबर में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई बैठक भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। यह पहली बैठक थी जो 2020 के बाद हुई, जब भारत-चीन सीमा के पश्चिमी क्षेत्र में टकराव हुआ था। इस प्रकार की उच्च स्तरीय वार्ताएं दोनों पक्षों की गंभीरता को दर्शाती हैं कि वे द्विपक्षीय संबंधों में सुधार लाना चाहते हैं।

फिलहाल, भारत-चीन सीमा विवाद में समाधान की प्रक्रिया धीमी है, परंतु यह निरंतरता और संवाद की मौजूदगी संकेत देती है कि दोनों देश स्थिरता और शांति की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। यह महत्वपूर्ण है कि दोनों पक्ष संयम बनाए रखें और विवादों को बढ़ाने के बजाय बातचीत के जरिए समाधान खोजें। सीमाओं पर स्थिरता से ही न केवल दोनों देशों के बीच आर्थिक और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता भी सुनिश्चित होगी।

अंततः, सीमा विवाद को सुलझाने के लिए समय और प्रयास जरूरी है। दोनों देशों को अपने मतभेदों को सुलझाने में धैर्य के साथ आगे बढ़ना होगा। तभी भारत-चीन संबंधों में स्थाई शांति और आपसी भरोसे का माहौल बन सकेगा, जो दोनों देशों और पूरे क्षेत्र के लिए लाभकारी होगा।

जुबानी तीर

“



भी अपराध है।

स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती (ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य)

“



जातिवादी हैं।

बीजेपी और RSS के लोगों ने उस घर परिवार को बिगाड़ा, जिसने कथावाचकों को पीटा। वहां पहले भी क्या हुआ था, जाकर पूछ लीजिए, वो लोग जातिवादी हैं जिन्होंने भगवान राम की जाति बताई। ऐसे लोग घोर

अखिलेश यादव (सपा प्रमुख)

“



रावण ने वेश बदलकर सीता का हरण किया। देश में गुणों से पूजा होती है, जाति से नहीं।

साक्षी महाराज (भाजपा सांसद)

अखिलेश यादव और उनकी पार्टी के दिमाग में जातिवाद है। ये लोग जातिवाद का जहर घोलकर राजनीति करते हैं। भाजपा सांसद ने यह भी कहा कि छद्म वेश में किसी को धोखा देना, भ्रमित करना, बहुत बड़ा अपराध है। कथावाचक के एक आधार कार्ड में ब्राह्मण, एक आधार में यादव है। क्या वह रोहिंया है, क्या वह आतंकवादी है, जो छिपकर रह रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यादव बनकर कथा करिए और कौन मना कर रहा है, मगर भ्रमित करके नहीं। रावण ब्राह्मण था, राम - ठाकुर थे, राम ने रावण का वध किया, क्या किसी ब्राह्मण ने आज तक रावण का पुतला फूँका, क्योंकि

शरीर, मन और आत्मा का मेल है योग

@ डॉ महिमा मक्कर

योग सिर्फ शरीर को मोड़ने या खींचने का अभ्यास नहीं है, यह एक ऐसी क्रिया है जो शरीर को भीतर से मजबूत करती है। नियमित योग करने से शरीर लचीला होता है, मांसपेशियां मजबूत होती हैं और शरीर की आकृति (पोश्चर) भी बेहतर होती है। प्राणायाम और ध्यान जैसे योग अभ्यास शरीर की इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हैं। इससे सर्दी-जुकाम, एलर्जी और अन्य आम बीमारियों से लड़ने की ताकत मिलती है।

ब्लड प्रेशर और शुगर को करता है नियंत्रित

योग करने से रक्त प्रवाह संतुलित रहता है जिससे हाई ब्लड प्रेशर और डायबिटीज जैसी बीमारियों को नियंत्रण में रखा जा सकता है।

मानसिक तनाव में कमी

आज मानसिक तनाव (Stress) हर उम्र के लोगों को प्रभावित कर रहा है। योग और विशेष रूप से 'ध्यान' यानी मेडिटेशन, मन को शांत करने में मदद करता है। इससे चिंता, अवसाद (डिप्रेशन) और चिड़चिड़ेपन में राहत मिलती है।

नींद बेहतर होती है

योग निद्रा (योगिक स्लीप) और कुछ विशेष आसनों से अनिद्रा की समस्या दूर होती है। नींद अच्छी होगी तो शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहेंगे।

एकाग्रता और स्मरण शक्ति में वृद्धि

छात्रों के लिए योग वरदान साबित हो सकता है। सूर्य नमस्कार, भ्रामरी प्राणायाम और ध्यान से एकाग्रता बढ़ती है। स्मरण शक्ति बेहतर होती है, जिससे पढ़ाई में मन लगता है और मानसिक थकान कम होती है।

वजन कम करने में मददगार

जो लोग वजन घटाना चाहते हैं, उनके लिए योग एक प्राकृतिक तरीका है। पाँवर योगा, सूर्य नमस्कार और कुछ विशेष आसन जैसे पवनमुक्तासन, भुजंगासन आदि शरीर की चर्बी को कम करने में मदद करते हैं। इसके अलावा यह शरीर को सही आकार में लाने में भी सहायक होता है।

रोगों से मुक्ति का सरल उपाय

पीठ दर्द, गर्दन दर्द, जोड़ों का दर्द: ज्यादातर लोग ऑफिस में लंबे समय तक बैठने या गलत ढंग से सोने के कारण दर्द से परेशान रहते हैं। योगिक मुद्राएं इस तरह की समस्याओं में राहत देती हैं।

पाचन क्रिया को दुरुस्त करता है

योग करने से पेट की मांसपेशियों की मालिश होती है जिससे गैस, अपच, कब्ज जैसी समस्याएं दूर होती हैं।

जीवन में अनुशासन और सकारात्मकता लाता है

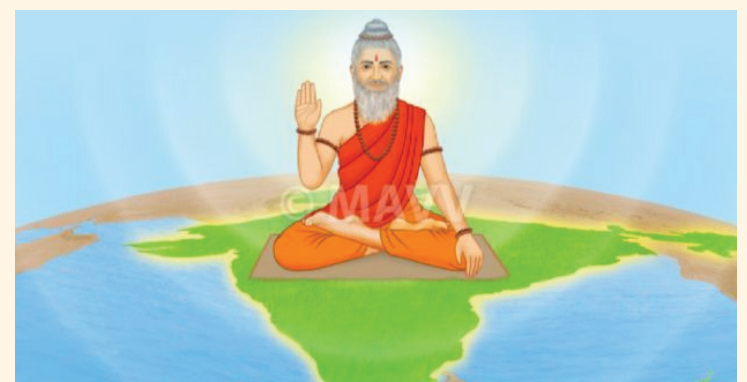
योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि अनुशासन



आध्यात्मिक विकास और आत्म-ज्ञान की ओर कदम

योग का अंतिम उद्देश्य सिर्फ शरीर को स्वस्थ रखना नहीं, बल्कि आत्मा से जुड़ना भी है। ध्यान और प्राणायाम जैसी विधियां हमें भीतर झाँकने का मौका देती हैं और जीवन के गहरे अर्थ को समझने में मदद करती हैं।

योग कोई विकल्प नहीं, यह आवश्यकता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में योग ही वह माध्यम है जो शरीर, मन और आत्मा – तीनों को एक साथ संतुलित करता है। यह न केवल बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है, बल्कि जीवन को लंबे समय तक स्वस्थ और प्रसन्न बनाए रखने का उपाय भी है। अगर आपने अब तक योग को अपनी दिनचर्या में शामिल नहीं किया है, तो आज से ही एक छोटा-सा कदम उठाइए – सुबह जल्दी उठिए, योग की शुरुआत कीजिए और फर्क खुद महसूस कीजिए।



की ओर एक कदम है। रोजाना एक ही समय पर योग करने से दिनचर्या सही रहती है। यह शरीर, मन और आत्मा में संतुलन लाकर इंसान को ज्यादा धैर्यवान, सकारात्मक और ऊर्जा से भरपूर बनाता है।

बढ़ती उम्र को धीमा करता है

नियमित योग से शरीर की कोशिकाएं लंबे समय तक सक्रिय और स्वस्थ बनी रहती हैं। इससे उम्र के लक्षण जैसे झुर्रियां, बालों का झड़ना और थकान कम महसूस होती है। यह शरीर में नयापन बनाए रखता है।

महिलाओं के लिए विशेष लाभ

महिलाएं अक्सर हार्मोनल बदलावों, मासिक धर्म की अनियमितता और गर्भावस्था के बाद शरीर में आई

कमजोरी से परेशान रहती हैं। योग में ऐसे कई आसन हैं जो महिलाओं के शरीर को इन बदलावों से उबरने में मदद करते हैं, जैसे – तितली आसन, सेतु बंधासन, शवासन आदि।

बच्चों और बुजुर्गों के लिए भी उपयोगी

बच्चों के लिए: आज के बच्चे मोबाइल, टीवी और इंटरनेट की दुनिया में खो गए हैं। योग उन्हें मानसिक रूप से स्थिर और अनुशासित बनाता है।

बुजुर्गों के लिए: बढ़ती उम्र में हड्डियों और जोड़ों में दर्द, सांस की तकलीफ और चिंता आम समस्याएं हैं। नियमित योग इन सबमें राहत देता है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है।



महात्मा धरनीदास जी: राम-नाम के प्रेमी संत

राम-नाम का रस ऐसा अमृत है, जो बिरले ही भक्तों के हृदय में उतरता है। यह रस वही चख पाते हैं, जिनके भाग्य में प्रभु की कृपा और प्रेम लिखा हो। राम-नाम का मर्म समझने वाला साधक संसार की नश्वरता को तुच्छ मानने लगता है। उसका मन वैराग्य के रंग में रंग जाता है, और वह परमात्मा के चरणों में लीन हो जाता है। ऐसे ही राम-नाम के सागर में गोता लगाने वाले महान संत थे महात्मा धरनीदास जी। उनका जीवन एक ऐसी प्रेरणा है, जो हमें सिखाती है कि सच्चा सुख केवल प्रभु के भजन में ही है। आइए, उनके जीवन की आध्यात्मिक यात्रा को सरल और भक्ति-भाव से समझें।

प्रारंभिक जीवन: भक्ति की नींव

महात्मा धरनीदास जी का प्राकट्य सत्रहवीं सदी के चौथे चरण में बिहार के छपरा जनपद में, पवित्र सरयू नदी के उत्तर तट पर मौंझी गाँव में हुआ। श्रीवास्तव कायस्थ कुल में जन्मे धरनीदास जी के परदादा टिकइतराय थे, जिनके बारे में कहा जाता है कि मुगल आक्रमणों के भय से वे मौंझी में आकर बसे थे। उनके पिता श्री परशुराम दास मौंझी के राजा के दरबार में सम्मानित व्यक्ति थे। उनकी माता श्रीमती विरमा देवी का कोमल और धार्मिक स्वभाव धरनीदास जी के जीवन पर गहरा प्रभाव डाल गया।

बचपन से ही धरनीदास जी का मन आध्यात्मिकता की ओर झुका हुआ था। उनकी सादगी और सरलता ऐसी थी कि कोई नहीं समझ पाता था कि यह बालक एक दिन सिद्ध संत बनकर असंख्य जीवों को भवसागर से पार उतारेगा। उनकी शिक्षा-दीक्षा उत्तम थी, और पिता की इच्छा से वे मौंझी के जमींदार के यहाँ दीवान के पद पर नियुक्त हुए। इस कार्य को उन्होंने पूरी निष्ठा और योग्यता से निभाया। राजा का उन पर अटूट विश्वास था, और उन्होंने सारा कार्यभार धरनीदास जी के हाथों में सौंप दिया।

वैराग्य का उदय: संसार से राम की ओर

धरनीदास जी की आध्यात्मिक साधना दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही थी। उनके हृदय में राम-नाम का प्रेम बढ़ता गया, और संसार की माया उनके लिए फीकी पड़ने लगी। सम्वत् 1713 में उनके पिता का देहांत हुआ, जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इस घटना ने उनके मन में वैराग्य की ज्वाला को और प्रज्वलित किया। उन्होंने संसार के सारे बंधनों को त्यागकर राम के चरणों में अपने आप को पूर्णतः समर्पित कर दिया।

एक दिन, जब वे राजा के कार्यालय में खाता-बही लिख रहे थे, उनका मन प्रभु के ध्यान में डूब गया। पास ही रखा पानी का लोटा उन्होंने उसी समय उड़ेल दिया। जब लोगों ने इसका कारण पूछा, तो वे मौन रहे। बाद में उन्होंने रहस्य खोला कि उसी समय जगन्नाथ पुरी में भगवान जगन्नाथ के वस्त्र में आग लग गई थी, और उन्होंने उस आग को बुझाने के लिए पानी डाला। राजा ने इसकी जाँच करवाई, और जब पुजारी ने बताया कि एक साधु ने आग बुझाई थी, तब राजा को अपनी भूल का एहसास हुआ। वे धरनीदास जी के चरणों में गिरकर क्षमा माँगने लगे और उन्हें जमींदारी देने की पेशकश की। लेकिन धरनीदास जी ने सब कुछ ठुकरा दिया और कहा:

*लिखनी नाहिं करूँ रे भाई,
मोहि राम-नाम-सुधि आई।*

इस घटना ने उनके हृदय में राम-नाम की मस्ती को और गहरा कर दिया।



साधना और दीक्षा: प्रभु के चरणों में समर्पण

धरनीदास जी ने गृहस्थ जीवन को त्यागकर सन्यास का मार्ग अपनाया। उन्होंने मौंझी के पास एक छोटी-सी झोपड़ी में रहकर तपस्या शुरू की। गृहस्थ जीवन में उन्होंने चन्द्रदास साधु से मंत्र लिया था, लेकिन वैराग्य धारण करने के बाद उन्होंने स्वामी विनोदानंद (जिन्हें कुछ लोग सेवानंद भी कहते हैं) को गुरु बनाया। उनकी गुरु-परंपरा में स्वामी रामानंद को आदि गुरु माना जाता है।

धरनीदास जी का जीवन अब पूरी तरह प्रभु भक्ति में समर्पित हो गया। वे रोजाना मौंझी से छह मील दूर ब्रह्मपुर में गंगा-स्नान के लिए जाते थे। उनका मन सदा प्रभु चिंतन में लीन रहता था। उनकी साधना इतनी गहरी थी कि उनका हृदय प्रभु के प्रेम से सराबोर हो गया। वे संसार को माया मानते थे और मन को समझाते थे कि वह सारे प्रपंचों का त्याग कर हरि का भजन करे।

प्रेम-प्रकाश: भक्ति का दर्शन

महात्मा धरनीदास जी ने अपनी रचनाओं में भगवत्प्रेम का अनुपम दर्शन प्रस्तुत किया। उनकी प्रसिद्ध रचना प्रेम-प्रकाश में आत्मा और परमात्मा के प्रेममय मिलन की गहन

व्याख्या की गई है। वे कहते थे कि राम-नाम का निरंतर स्मरण ही परमपद की प्राप्ति का सच्चा साधन है। उनकी वाणी में प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण झलकता था:

मैं निरगुनिया गुन नहीं जाना, एक धनी के हाथ बिकाना।

उनका मानना था कि प्रभु के भक्त ही सच्चे पतिव्रता हैं, और जो हरि-नाम को भूल जाते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। उनकी रचनाएँ शब्द-प्रकाश और रत्नावली भी भक्ति और वैराग्य की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। इन रचनाओं में उन्होंने सत्य, प्रेम और निर्गुण भक्ति का मर्म समझाया।

अलौकिक घटनाएँ: प्रभु कृपा का प्रतीक
धरनीदास जी के जीवन में कई अलौकिक घटनाएँ जुड़ी हैं, जो उनकी सिद्धि और प्रभु कृपा को दर्शाती हैं। एक बार कुछ चोर उनके आश्रम में रुके और उनसे गीत गाने को कहा। चोरी करने के बाद लौटते समय चोर अंधे हो गए। धरनीदास जी ने अपने शिष्य सदानंद को उन्हें आश्रम लाने के लिए भेजा। उनकी कृपा से चोरों की आँखें की रोशनी लौट आई, और वे उनके शिष्य बन गए। उनका जीवन सुधर गया, और हृदय पवित्र हो गया।

एक अन्य घटना में, कुछ साधुओं ने उनके अन्न

को अशुद्ध कहकर ठुकरा दिया, क्योंकि उनकी बाँह पर द्वारिकाधीश की छाप नहीं थी। धरनीदास जी अपनी कुटिया में गए और जब बाहर आए, तो उनकी बाँह पर द्वारिकाधीश की छाप देखकर साधु आश्चर्यचकित रह गए। हालाँकि, धरनीदास जी चमत्कारों से दूर रहते थे और सदा प्रभु भक्ति में लीन रहते थे।

अंतिम यात्रा: प्रभु में लीन

धरनीदास जी ने अपना संपूर्ण जीवन मौंझी में ही बिताया। अंत समय में, वे सरयू और गंगा के संगम पर चादर बिछाकर बैठ गए। शिष्यों ने देखा कि उनका शरीर प्रकाश के रूप में परिवर्तित हो गया, और वे अदृश्य हो गए। उस समय सारा वातावरण उनकी भक्ति भरी वाणी से गूँज उठा। उनका जीवन एक ऐसी मिसाल है, जो हमें सिखाती है कि सच्ची भक्ति ही जीवन का परम लक्ष्य है।

राम-नाम का अमृत

महात्मा धरनीदास जी का जीवन हमें सिखाता है कि संसार की माया क्षणभंगुर है, और सच्चा सुख केवल राम-नाम के भजन में है। उनकी साधना, वैराग्य और भक्ति की गाथा आज भी लाखों भक्तों को प्रेरित करती है। उनकी रचनाएँ और उनका जीवन एक दीपक की तरह हैं, जो हमें अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाता है। राम-नाम का जो रस उन्होंने चखा, वही रस वे हमें चखाने आए थे।

कंत दरस बिनु बावरी, मो तन व्याप पीर प्रीतम की।
मो तन व्याप पीर प्रीतम की, मूरुख जानै आवरी।
पसरि गयो तरु प्रेम साखा सखि, विसरि गयो चितचावरी।

उनका यह कथन हमारे हृदय को प्रभु के प्रेम से भर देता है। धरनीदास जी का जीवन हमें सिखाता है कि प्रभु का नाम ही सच्चा धन है, और उसी में जीवन का असली आनंद छिपा है।



B-2 स्टील्थ बॉम्बर और एक भारतीय इंजीनियर की कहानी

अमेरिका का B-2 स्टील्थ बॉम्बर दुनिया का सबसे खतरनाक और गुप्त हथियार है। यह विमान रडार से बच सकता है, दुश्मन को दिखाई नहीं देता, और गुप्त मिशनों में गेम-चेंजर है। लेकिन इसकी कहानी में एक भारतीय मूल के इंजीनियर का नाम भी जुड़ा है—नोशीर गोवाडिया। मुंबई में जन्मा यह इंजीनियर पहले अमेरिका का हीरो बना, फिर उसने ऐसा धोखा दिया कि पूरी दुनिया चौंक गई। उसने B-2 के सीक्रेट्स चीन को बेच दिए, जिससे आज दुनिया की सैन्य ताकत का बैलेंस बदल सकता है। आइए, इस कहानी को समझते हैं—कैसे एक ब्रिलियंट दिमाग ने इतिहास बनाया और फिर उसे बिगाड़ दिया।

एक भारतीय दिमाग की चमक: B-2 का जन्म नोशीर गोवाडिया का जन्म 1944 में मुंबई में एक पारसी परिवार में हुआ। बचपन से ही उनका दिमाग तेज था। कहा जाता है कि 15 साल की उम्र में उन्होंने पीएचडी लेवल की पढ़ाई पूरी कर ली थी। 1960 के दशक में वो अमेरिका चले गए और वहां एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में मास्टरी हासिल की। 1968 में वो नॉथ्रॉप (अब नॉथ्रॉप ग्रमैन) कंपनी में शामिल हुए, जो B-2 स्टील्थ बॉम्बर बना रही थी।

नोशीर ने B-2 के प्रोपल्शन सिस्टम को डिजाइन करने में बड़ी भूमिका निभाई। यह सिस्टम विमान को रडार और इन्फ्रारेड डिटेक्शन से बचाता था, यानी इसे “अदृश्य” बनाता था। उनके काम की वजह से B-2 दुनिया का सबसे खतरनाक स्टील्थ बॉम्बर बना, जो 10,000 मील तक बिना रीफ्यूलिंग के उड़ सकता था और न्यूक्लियर हथियार ले जा सकता था। नॉथ्रॉप में 20 साल तक काम करने के दौरान नोशीर को टॉप-सीक्रेट सिक्क्योरिटी क्लीयरेंस मिला, जो उन्हें अमेरिका के सबसे गुप्त प्रोजेक्ट्स तक पहुंच देता था।

1986 में नोशीर ने नॉथ्रॉप छोड़ दी और अपनी कंपनी, NS Gowadia Inc., शुरू की। वो CIA और लॉस एलामोस जैसे बड़े प्रोजेक्ट्स पर सलाहकार के तौर पर काम करते रहे। लेकिन उनकी जिंदगी में एक टर्निंग पॉइंट आया, जब उनकी फाइनेंशियल प्रॉब्लम्स बढ़ने लगीं। हवाई में उनका महंगा घर और मॉर्गेज का बोझ उन्हें परेशान करने लगा। यहीं से उनकी कहानी डार्क टर्न लेती है।

चीन को बिके सीक्रेट्स

2003 से 2005 के बीच नोशीर ने चीन के साथ डील शुरू की। उन्होंने B-2 के स्टील्थ प्रोपल्शन सिस्टम की गुप्त जानकारी चीन को बेच दी। यह जानकारी इतनी कीमती थी कि इससे चीन ने अपने कूज मिसाइल्स और स्टील्थ बॉम्बर प्रोग्राम को बेहतर बनाया। बताया जाता है कि नोशीर ने इसके लिए सिर्फ 1,10,000 डॉलर लिए। उन्होंने न सिर्फ चीन, बल्कि जर्मनी और स्विट्जरलैंड जैसे देशों को भी कुछ गुप्त जानकारी दी।



2005 में FBI को नोशीर की हरकतों का पता चला। उनकी हवाई वाली मेशन में छापा मारा गया, जहां सैकड़ों क्लासिफाइड डॉक्यूमेंट्स और चीनी ऑफिशियल्स के साथ ईमेल मिले। पहले तो नोशीर ने इनकार किया, लेकिन बाद में उन्होंने कबूल किया कि उन्होंने चीन को कूज मिसाइल के लिए स्टील्थ नोजल की डिजाइन दी। उन्होंने इसे “गलती” बताया और कहा, “यह जासूसी और देशद्रोह था।” 2010 में कोर्ट ने उन्हें जासूसी के दोष में 32 साल की सजा सुनाई। आज वो कोलोराडो की सुपरमैक्स जेल में हैं।

नोशीर का यह धोखा सिर्फ अमेरिका के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए बड़ा खतरा बन गया। उनकी दी हुई जानकारी से चीन ने H-20 स्टील्थ बॉम्बर और J-36 फाइटर जैसे प्रोजेक्ट्स पर काम शुरू किया। मई 2025 में सैटेलाइट इमेजेस में चीन के मलान एयरबेस पर B-2 जैसा एक ड्रोन दिखा, जो शायद H-20 प्रोग्राम का हिस्सा था। यह दिखाता है कि नोशीर के सीक्रेट्स ने चीन की सैन्य ताकत को कितना बूस्ट दिया।

दुनिया पर असर: स्टील्थ का ग्लोबल गेम

नोशीर के धोखे का असर आज साफ दिख रहा है। 22 जून 2025 को अमेरिका ने ऑपरेशन मिडनाइट हैमर में B-2 बॉम्बर्स का इस्तेमाल करके ईरान के न्यूक्लियर साइट्स—फोर्डो, नटांज, और इस्फहान—पर हमला किया। यह दिखाता है कि B-2 कितना पावरफुल है। लेकिन उसी वक्त, चीन का B-2 जैसा विमान देखकर दुनिया टेंशन में है। अगर चीन का H-20 बॉम्बर तैयार हो गया, तो यह ग्लोबल एयर पावर का बैलेंस बदल सकता है।

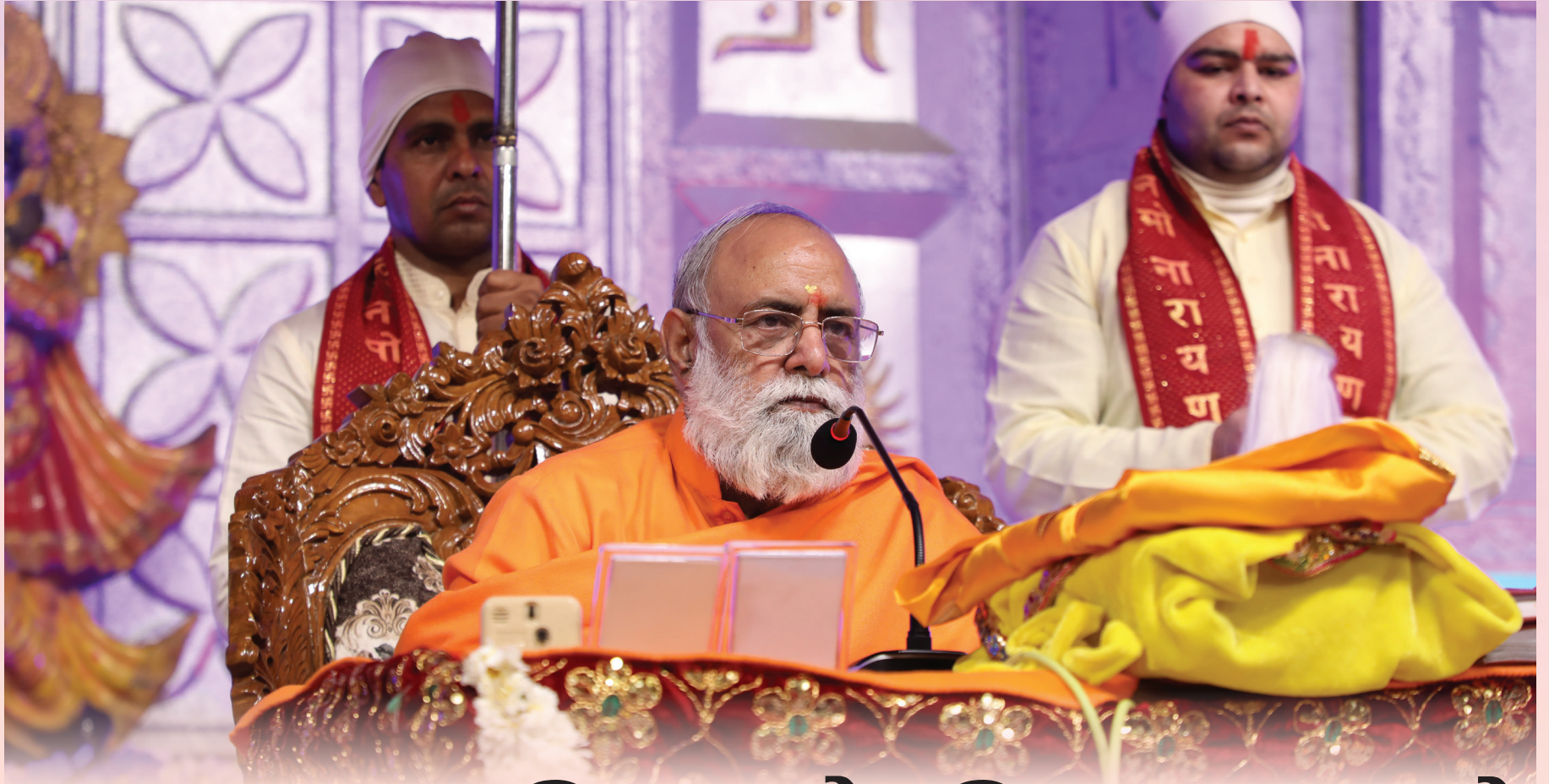
आज सिर्फ तीन देशों—अमेरिका, रूस, और चीन—के पास स्टील्थ टेक्नोलॉजी है। अमेरिका और रूस ने अपनी टेक्नोलॉजी खुद बनाई, लेकिन चीन को यह नोशीर की जासूसी से मिली। यह एक बड़ा सवाल उठाता है—क्या एक इंसान की गलती दुनिया की सैन्य ताकत का खेल बदल सकती है? नोशीर का केस दिखाता है कि सिक्क्योरिटी सिस्टम में कितनी कमियां हो सकती हैं। अगर इतने बड़े इंजीनियर को फाइनेंशियल प्रॉब्लम्स की वजह से गलत रास्ता चुनना पड़ा, तो क्या सरकारें अपने

सीक्रेट्स को और बेहतर तरीके से प्रोटेक्ट कर सकती थीं?

क्या सबक मिला? एक कहानी का अंत

नोशीर गोवाडिया की कहानी एक सबक है। एक तरफ, वो एक ब्रिलियंट इंजीनियर थे, जिन्होंने अमेरिका के सबसे खतरनाक हथियार को बनाने में मदद की। दूसरी तरफ, उनकी गलती ने वही टेक्नोलॉजी दुश्मन के हाथों में पहुंचा दी। उनके बेटे, एश्टन गोवाडिया, आज भी कहते हैं कि उनके पिता बेकसूर हैं और FBI ने गलत नैरेटिव बनाया। लेकिन कोर्ट और सबूतों ने नोशीर को दोषी ठहराया।

यह कहानी हमें सोचने पर मजबूर करती है—ब्रिलियंस और बेट्रेयल के बीच की लाइन कितनी पतली है? नोशीर जैसे लोग, जो इमिग्रेंट्स के तौर पर नए देश में कुछ बड़ा करते हैं, उनकी उपलब्धियां गर्व की बात हैं। लेकिन उनकी गलतियां भी उतनी ही बड़ी चेतावनी देती हैं। आज जब हम B-2 की ताकत देखते हैं, तो नोशीर की कहानी याद आती है—एक भारतीय दिमाग की चमक और उसका अंधेरा।



@ लव कुमार धींगड़ा

गंगा दशहरा के महा पावन अवसर पर हरिद्वार स्थित हरि सेवा आश्रम द्वारा आयोजित संत सम्मेलन में जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरी जी महाराज, निर्वाणी पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी विशोकानन्द जी महाराज और सभी अखाड़ों के विशिष्ट संतों ने अनंत श्री विभूषित जगद्गुरु महा ब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी को देवी मां दुर्गा की दिव्य सिद्ध प्रतिमा भेंट की। इस अवसर पर जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरी जी महाराज ने कहा कि जब कोई व्यक्ति समाज के द्वारा, सुसंस्कृत विभूति संतों के द्वारा कोई उच्च पदस्थ होता है तो उनके प्रति देव भाव भी रखा जाता है। भले ही सामान्य दुर्वा या कुशा का आसन दिया जाए, ये कहा जा सकता है कि ये उनका आसन है। हमारे अत्यंत विनम्र एवं विद्या सम्पन्न प्रिय जगद्गुरु जी महाराज, जिनको निरंजनी अखाड़े ने उच्च पद पर प्रतिष्ठित किया है, पूज्य कुमार स्वामी जी महाराज, जो मंत्र उपासना विधियों के लिए ख्याति प्राप्त हैं, उनके कार्य निस्संदेह प्रशंसनीय हैं, अनुकरणीय हैं।

उन्होंने आप्रेशन सिन्दूर पर भी अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मांग का सिन्दूर सनातन संस्कृति की आद्य परंपरा का प्रतीक है। जब देश की माताओं-बहनों के सिन्दूर को कुछ दुरात्माओं ने उजाड़ा तो सेना ने सामरिक नीतियों, सामरिक शक्तियों और राजनीतिक दलों को एक साथ लाकर सिन्दूर की शक्ति का अहसास कराया। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देश की सेनाओं ने सिन्दूर का महत्व बताने का काम किया और सिन्दूर को मिटाने वाली दुरात्माओं को सबक सिखाया।

पूज्य जगद्गुरु जी हैं संतों के बहुत बड़े सेवक

संत सम्मेलन में मंच संचालन करते हुए स्वामी हरि चेतनानंद गिरी जी महाराज ने कहा कि यह बहुत शुभ अवसर है। अभी हाल ही में निरंजनी अखाड़े ने जिन्हें जगद्गुरु की महान उपाधि से अलंकृत किया, ऐसे परम पूज्य जगद्गुरु महा ब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी का आज शुभ आगमन हुआ है।

विनम्र और विद्या सम्पन्न हैं जगद्गुरु

मां दुर्गा से बढ़कर और कुछ नहीं

इस अवसर पर परम पूज्य सदगुरुदेव जी ने कहा कि सभी महान संतों ने मिलकर जो मां दुर्गा की सिद्ध प्रतिमा भेंट की, उससे बढ़कर इस दुनिया में कुछ भी नहीं है। ये साक्षात मां दुर्गा हैं, जो इस संसार को पैदा करने वाली हैं, चन्द्रमा, सूरज, तारों को पैदा करने वाली हैं। पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश को पैदा करने वाली हैं। भगवान राम, कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु, महेश को पैदा करने वाली हैं। जिससे बढ़कर न कोई था, न है और न होगा। उस मां दुर्गा की मूर्ति को इन्होंने सिद्ध किया और देवी मां दुर्गा ने इन्हें साक्षात दर्शन भी दिए। ऐसी सिद्ध देवी मां दुर्गा का एक मिनट के पाठ करने से ही दर्शन हो जाएंगे।

संत कर रहे सनातन संस्कृति को संरक्षित

महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल एवं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि देश में सनातन धर्म संस्कृति को संरक्षित व संवर्धित करने का काम संत और महंत कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी देश के संतों के बताए मार्ग पर चलकर देश को सनातन परंपरा की मजबूती के साथ विश्व पटल पर बढ़ाने का काम कर रहे हैं। देश विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर है।

संतों व महान विभूतियों की रही उपस्थिति

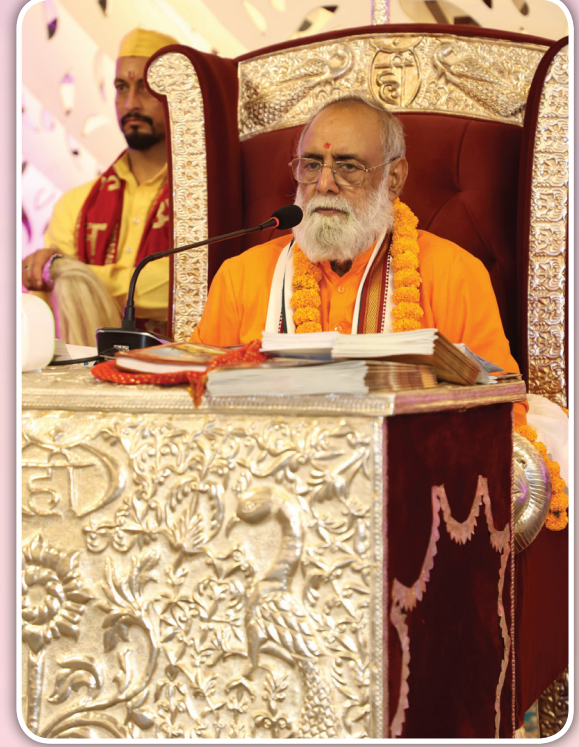
इस अवसर पर उपरोक्त के अलावा गीता मनीषी महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज, सांसद महामण्डलेश्वर साक्षी जी महाराज, सांसद सतपाल जी महाराज, महामण्डलेश्वर ललितानंद गिरी जी महाराज,

नव विवाहित युगल को मिला संतों का आशीर्वाद

इस अवसर पर परम पूजनीय जगद्गुरु ब्रह्म स्वरूपणी ऋतु खुशबू जी एवं परम आदरणीय जतिन वशिष्ठ जी भी परिणय सूत्र में बंधने उपरांत हरिद्वार के संत सम्मेलन में सभी महान संतों से आशीर्वाद ग्रहण करने पहुंचे। सभी विशिष्ट संतों ने इन नव विवाहित युगल को अनेकों आशीर्वचन, मंगल कामनाएं व आशीर्वाद प्रदान किए। संतों ने जगद्गुरु की उपाधि से विभूषित ब्रह्म स्वरूपणी ऋतु खुशबू जी के महान तप व साधना की प्रशंसा करते हुए उन्हें साधुवाद दिया तथा वैवाहिक युगल को भी परम पूज्य सदगुरुदेव जी के मार्ग पर चलने तथा सनातन संस्कृति के ध्वज वाहक बनने हेतु भी शुभकामनाएं प्रेषित की।

महामंडलेश्वर संतोषी माता मन्दिर, महामण्डलेश्वर मैत्री गिरी जी महाराज, महामण्डलेश्वर यतीन्द्रानंद जी महाराज, महामण्डलेश्वर ज्ञानदेव जी महाराज, महामण्डलेश्वर भगवत स्वरूप जी महाराज, महामण्डलेश्वर विज्ञानानन्द सरस्वती जी महाराज, महंत ऋषिश्चरानन्द जी महाराज, महंत विष्णुदास जी महाराज, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री डा. रमेश पोखरियाल निशंक जी, पूर्व रक्षा राज्य मंत्री सांसद श्री अजय भट्ट जी, राज्यसभा सांसद श्री नरेश बंसल जी, विधायक श्री प्रेमचंद अग्रवाल जी, मेयर श्री किरण जैसल जी, भगवान श्री लक्ष्मीनारायण धाम के महामंत्री श्री सुशील वर्मा, 'गुरुदास' जी मौजूद रहे।

जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी ने कराया शास्त्रोक्त अवधान योग



हजारों श्रद्धालुओं ने किया अनुभव साझा

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के पावन अवसर पर राजधानी दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में विश्वविख्यात सामाजिक-आध्यात्मिक संस्था भगवान श्री लक्ष्मीनारायण धाम द्वारा एक दिवसीय “योग विशेष समागम” का भव्य आयोजन किया गया। इस दिव्य समागम का मुख्य उद्देश्य योग के गूढ़ रहस्यों को जनसामान्य तक पहुँचाना तथा आत्मिक जागृति के माध्यम से मानव जीवन को शांतिपूर्ण, स्वस्थ और सार्थक बनाना रहा।

इस विशेष अवसर पर परम पूज्य अनंत श्री विभूषित जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी ने वैदिक शास्त्रों में वर्णित भगवान शिव प्रदत्त ‘अवधान योग’ की अद्वितीय विधि का सजीव अभ्यास करवाया। यह योग पद्धति सामान्य योगासनों से भिन्न है और आत्मा के गूढ़ रहस्यों को जानने तथा अनुभव करने में सहायक है।

समागम में दिल्ली-एनसीआर ही नहीं, बल्कि भारत के अनेक राज्यों से आए हजारों श्रद्धालु उपस्थित रहे। उपस्थित संगत ने अवधान योग के अभ्यास के उपरांत हाथ उठाकर तथा मंच पर आकर अपने-अपने दिव्य अनुभव साझा किए और बताया कि उन्हें तत्क्षण मानसिक शांति, ऊर्जा एवं आत्मिक संतुलन की अनुभूति हुई।

समागम के अतिथि के रूप में दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री विजेंद्र गुप्ता जी उपस्थित रहे। वहीं कार्यक्रम में पूर्व विदेश राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी, दिल्ली नगर निगम के उप महापौर श्री जय भगवान यादव जी, विधायक श्री पवन शर्मा जी, नगर निगम पार्षद श्रीमती स्मिता कौशिक जी, श्रीमती मीनू गोयल जी, भाजपा महिला मोर्चा की महामंत्री श्रीमती कविता जी, एवं भाजपा जिलाध्यक्ष श्री गोयल जी सहित अनेक गणमान्य जनप्रतिनिधियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समागम की शोभा बढ़ाई।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने सभी अतिथियों को उनके सामाजिक एवं जनसेवा कार्यों के लिए सम्मान पत्र भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। मंच संचालन संस्था के महामंत्री श्री सुशील वर्मा ‘गुरुदास’ जी द्वारा



प्रभावशाली एवं भावपूर्ण रूप से किया गया।

अपने संबोधन में सद्गुरुदेव श्री जी ने कहा: “योग कोई शारीरिक व्यायाम नहीं, यह आत्मा के साक्षात्कार का मार्ग है। मन, बुद्धि और अहंकार से योग को नहीं जाना जा सकता, जैसे अंधकार सूर्य का ज्ञान नहीं कर सकता। आत्मा के बारे में गीता के दूसरे अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण स्पष्ट रूप से कहते हैं कि आत्मा अजन्मा, अविनाशी, अचल और सर्वव्यापक है। आत्मा हम सबकी एक है, यही वास्तविक योग का सार है।”

इस अवसर पर परम पूज्य गुरुमां जी, ब्रह्मस्वरूपिणी जगद्गुरु ऋतु खुशबू जी, परम आदरणीय जतिन शर्मा वशिष्ठ जी, तथा दिल्ली पुलिस के पूर्व स्पेशल पुलिस कमिशनर एवं भाभा रिसर्च इंस्टिट्यूट के वरिष्ठ

वैज्ञानिक श्री पी. एन. अग्रवाल जी के अलावा कई प्रमुख आध्यात्मिक एवं सामाजिक हस्तियाँ भी उपस्थित रहीं।

समागम के दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं के लिए निःशुल्क चौबीसों घंटे लंगर-प्रसाद की उत्तम व्यवस्था की गई थी। इसके अतिरिक्त संगत में से अनेकों ने ‘बीज मंत्र’ और संस्था द्वारा संचालित ‘मिरेकल वंडर वी वाश’ से हुए लाभों के अनुभव भी साझा किए। श्रद्धालुओं को बीज मंत्र की पुस्तकें भी निःशुल्क वितरित की गईं।

इस दिव्य आयोजन ने न केवल योग के आध्यात्मिक स्वरूप को जन-जन तक पहुँचाया, बल्कि श्रद्धालुओं को आत्मिक जागरूकता के नए द्वार भी प्रदान किए। आयोजन में सहभागिता कर उपस्थित संगत ने इसे जीवन की एक अविस्मरणीय अनुभूति बताया।

कोलकाता लॉ कॉलेज रेप मामले में नए खुलासे जानें कोलकाता लॉ स्टूडेंट रेप केस में अब तक क्या-क्या आया सामने?

@ प्रभाकर चतुर्वेदी

कोलकाता के साउथ कोलकाता लॉ कॉलेज में 25 जून को हुई एक दुखद और शर्मनाक घटना ने पूरे बंगाल को झकझोर कर रख दिया है। एक पहली वर्ष की छात्रा के साथ कथित रूप से हुई गैंगरेप और शारीरिक हिंसा ने न केवल कॉलेज की प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचाया है, बल्कि शैक्षिक संस्थानों में सुरक्षा व्यवस्था और छात्र-छात्राओं के संरक्षण पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

घटना का पूरा ब्योरा

कहानी उस समय शुरू होती है जब छात्रा अपनी क्लास खत्म कर घर जाने की तैयारी कर रही थी। तभी कॉलेज के एक सीनियर छात्र, मनोजीत मिश्रा उर्फ 'मैंगो', ने उसका रास्ता रोका। मनोजीत कॉलेज में जाना-पहचाना नाम था, जिसे छात्र और शिक्षक दोनों जानते थे। लेकिन उसकी दबंगई और गलत व्यवहार के कारण कोई भी उसके खिलाफ आवाज उठाने से डरता था।

मनोजीत के साथ दो और छात्र थे, प्रमोद मुखर्जी और जैब अहमद। तीनों ने मिलकर छात्रा को जबरन कॉलेज के गार्ड रूम तक खींच लिया। गार्ड रूम वह जगह है जहाँ सुरक्षा कर्मी मौजूद रहते हैं, लेकिन वहाँ तैनात 55 वर्षीय पिनाकी बनर्जी ने हस्तक्षेप नहीं किया। उसने दरवाजा खोल दिया और बाहर जाकर बैठ गया। तीन घंटे तक उस छात्रा के साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया। उसे पीटा गया, उसके कपड़े फाड़े गए और बाद में गैंगरेप की घिनौनी वारदात को अंजाम दिया गया। पीड़िता की मदद के लिए गुहार के बावजूद कोई आगे नहीं आया।

मनोजीत मिश्रा हैं कॉलेज का दबंग छात्र



मनोजीत मिश्रा का कॉलेज में आतंक का राज था। वह अक्सर छात्राओं को शादी के लिए प्रपोज करता था और मना करने पर धमकाता था। छात्रों ने बताया कि वह लड़कियों की तस्वीरें खींचकर अश्लील रूप में एडिट करता था और दोस्तों के बीच उनका मजाक उड़ाता था। यह सब सालों से चलता आ रहा था, लेकिन कॉलेज



प्रशासन ने कोई सख्त कार्रवाई नहीं की। राजनीतिक प्रभाव के कारण भी मनोजीत के खिलाफ कार्रवाई मुश्किल थी। वह 2021 में टीएमसी छात्र इकाई से निष्कासित हो चुका था, परन्तु उसके आचरण में कोई बदलाव नहीं आया।

पुलिस की कार्रवाई और जांच

घटना की खबर मिलते ही पुलिस ने मनोजीत मिश्रा, प्रमोद मुखर्जी, जैब अहमद और सुरक्षा गार्ड पिनाकी बनर्जी को गिरफ्तार कर लिया। मामले की जांच के लिए पांच सदस्यीय विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित किया गया है। फॉरेंसिक टीम ने गार्ड रूम से सबूत एकत्रित किए हैं। सीसीटीवी फुटेज में स्पष्ट रूप से दिख रहा है कि किस प्रकार छात्रा को जबरदस्ती गार्ड रूम तक ले जाया गया। पुलिस को आरोपियों के फोन से भी वीडियो प्राप्त हुआ है जिसमें वारदात की कई भयावह झलकियां कैद हैं। मेडिकल रिपोर्ट से पुष्टि हुई है कि पीड़िता के शरीर पर चोट के निशान हैं जो शारीरिक और मानसिक यातना को दर्शाते हैं।

कॉलेज प्रशासन और सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल

इस मामले ने कॉलेज प्रशासन की भूमिका पर गंभीर संदेह पैदा कर दिया है। यह कैसे संभव हुआ कि मनोजीत जैसी दबंग शख्सियत कॉलेज में लंबे समय तक बिना किसी कार्रवाई के आतंक मचाता रहा? छात्राओं की शिकायतों को नजरअंदाज क्यों किया गया? सबसे बड़ा सवाल यह भी है कि गार्ड पिनाकी बनर्जी ने जो सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाली थी, वह क्यों चुप रहा? क्या वह दोषी तत्वों का संरक्षक था?

भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बी.आर. गवई को पत्र के जरिए एक याचिका भेजी गई है, जिसमें

सीजेआई गवई से आव्रह

भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बी.आर. गवई को पत्र के जरिए एक याचिका भेजी गई है, जिसमें आग्रह किया गया है कि वह कोलकाता के एक लॉ कॉलेज में हुए कथित सामूहिक दुष्कर्म के मामले का संज्ञान लें। यह मामला कस्बा क्षेत्र में स्थित साउथ कोलकाता लॉ कॉलेज का है, जहां 25 जून को एक प्रथम वर्ष की छात्रा के साथ कथित तौर पर कॉलेज परिसर के अंदर ही तीन लोगों ने मिलकर दुष्कर्म किया। आरोपियों का संबंध तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की



छात्र इकाई 'तृणमूल छात्र परिषद' (टीएमसीपी) से बताया जा रहा है। इसके अलावा, याचिका में यह भी कहा गया है कि पीड़िता, उसके परिवार और सभी गवाहों को तत्काल और पूरी सुरक्षा उपलब्ध कराई जाए। साथ ही शिक्षण संस्थानों में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश तैयार किए जाएं। इसमें तृणमूल कांग्रेस के नेताओं, खासकर कल्याण बनर्जी और मदन मित्रा के खिलाफ भी कार्रवाई की मांग की गई है, जिन्होंने कथित तौर पर पीड़िता को अपमानित करने वाले बयान दिए हैं।

आग्रह किया गया है कि वह कोलकाता के एक लॉ कॉलेज में हुए कथित सामूहिक दुष्कर्म के मामले का संज्ञान लें। यह मामला कस्बा क्षेत्र में स्थित साउथ कोलकाता लॉ कॉलेज का है, जहां 25 जून को एक प्रथम वर्ष की छात्रा

के साथ कथित तौर पर कॉलेज परिसर के अंदर ही तीन लोगों ने मिलकर दुष्कर्म किया। आरोपियों का संबंध तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की छात्र इकाई 'तृणमूल छात्र परिषद' (टीएमसीपी) से बताया जा रहा है।

संविधान की आत्मा पर सवाल

समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष शब्दों का विवाद

भारतीय संविधान की प्रस्तावना को देश का मूल दस्तावेज माना जाता है, जो भारत के लोकतांत्रिक और समावेशी मूल्यों को दर्शाता है। लेकिन हाल ही में, 1976 में 42वें संशोधन के जरिए प्रस्तावना में जोड़े गए “समाजवादी” और “धर्मनिरपेक्ष” शब्दों पर एक नया विवाद शुरू हो गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के बयानों ने इस बहस को और हवा दी है। यह लेख इस विवाद को कई कोणों से समझने की कोशिश करता है, ताकि आम आदमी भी इस मसले की गहराई को समझ सके।

1. विवाद की शुरुआत: होसबाले का बयान

27 जून 2025 को नई दिल्ली में अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित एक कार्यक्रम में आरएसएस के महासचिव दत्तात्रेय होसबाले ने संविधान की प्रस्तावना से “समाजवादी” और “धर्मनिरपेक्ष” शब्दों को हटाने की समीक्षा की मांग की। उन्होंने कहा कि ये शब्द 1975 के आपातकाल के दौरान जोड़े गए थे, जब देश में मौलिक अधिकार निलंबित थे, संसद और न्यायपालिका कमजोर थी। होसबाले का तर्क था कि बाबासाहेब अंबेडकर ने मूल संविधान में इन शब्दों को शामिल नहीं किया था, और इन्हें आपातकाल के माहौल में जोड़ा जाना संविधान की मूल भावना के खिलाफ था। होसबाले ने यह भी कहा कि भारतीय संस्कृति में “सर्वधर्म समभाव” की बात है, न कि “धर्मनिरपेक्षता” की। उनके मुताबिक, इन शब्दों की जरूरत पर राष्ट्रीय बहस होनी चाहिए। उनके इस बयान ने तुरंत राजनीतिक हलकों में हंगामा मचा दिया। विपक्षी दलों, खासकर कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (राजद), ने इसे संविधान की आत्मा पर हमला करार दिया।

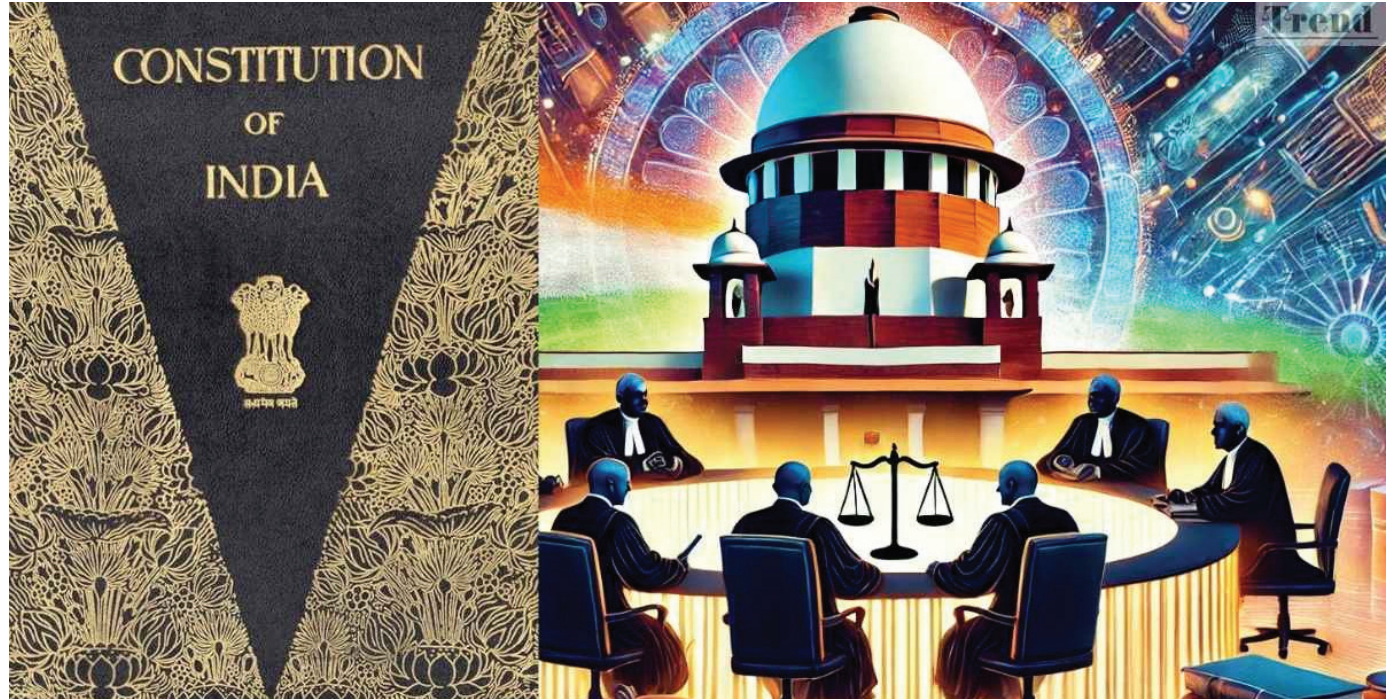
2. उपराष्ट्रपति का बयान: नासूर या संविधान की आत्मा?

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 28 जून 2025 को एक पुस्तक विमोचन समारोह में होसबाले के बयान का समर्थन करते हुए कहा कि संविधान की प्रस्तावना “परिवर्तनशील नहीं” है और इसे संविधान की आत्मा माना जाता है। उन्होंने 1976 के 42वें संशोधन को गलत ठहराते हुए कहा कि “समाजवादी”, “धर्मनिरपेक्ष” और “अखंडता” जैसे शब्दों को जोड़ना संविधान निर्माताओं की भावना के साथ धोखा है। धनखड़ ने इन शब्दों को “नासूर” बताया, जो देश में उथल-पुथल पैदा कर सकते हैं।

उन्होंने यह भी दावा किया कि भारत के अलावा किसी अन्य देश ने अपनी संविधान की प्रस्तावना में बदलाव नहीं किया। धनखड़ के इस बयान ने विवाद को और गहरा कर दिया। उनके शब्दों ने न केवल आपातकाल की आलोचना को बल दिया, बल्कि यह भी सवाल उठाया कि क्या ये शब्द वाकई संविधान की मूल भावना का हिस्सा हैं। उनके बयान को कुछ लोग आरएसएस के विचारों के समर्थन के रूप में देख रहे हैं, जबकि विपक्ष ने इसे संविधान विरोधी करार दिया।

3. 1976 का संशोधन: क्यों और कैसे हुआ?

1976 में 42वें संशोधन के जरिए संविधान



की प्रस्तावना में “समाजवादी”, “धर्मनिरपेक्ष” और “अखंडता” शब्द जोड़े गए। यह बदलाव तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की सरकार के दौरान आपातकाल (1975-1977) के समय हुआ। उस समय देश में राजनीतिक अस्थिरता थी, और इंदिरा गांधी पर तानाशाही के आरोप लग रहे थे। इन शब्दों को जोड़ने का मकसद सरकार की छवि को गरीबों और सभी धर्मों के प्रति समानता की पक्षधर के रूप में पेश करना था।

“समाजवादी” शब्द जोड़कर सरकार ने यह दिखाने की कोशिश की कि वह गरीबों और वंचितों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। वहीं, “धर्मनिरपेक्ष” शब्द से यह संदेश दिया गया कि भारत सभी धर्मों को समान अधिकार देता है और राज्य किसी धर्म का पक्ष नहीं लेगा। लेकिन यह संशोधन आपातकाल के दौरान हुआ, जब मौलिक अधिकार निलंबित थे, जिसके कारण इसे हमेशा विवादित माना गया। कुछ जानकारों का कहना है कि अगर इन शब्दों को हटाने की जरूरत थी, तो 1977 में जनता पार्टी की सरकार ने ऐसा क्यों नहीं किया?

बाबासाहेब अंबेडकर ने संविधान सभा में इन शब्दों को शामिल न करने का समर्थन किया था। उनका मानना था कि संविधान की संरचना पहले से ही धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करती है। उदाहरण के लिए, अनुच्छेद 15 में धर्म, जाति या लिंग के आधार पर भेदभाव न करने की बात कही गई है।

4. विपक्ष का पलटवार: संविधान की आत्मा की रक्षा

होसबाले और धनखड़ के बयानों का विपक्ष ने तीखा विरोध किया। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने X पर लिखा कि आरएसएस और बीजेपी का असली एजेंडा संविधान को बदलकर मनुस्मृति लागू करना है। उन्होंने कहा कि “समाजवादी” और “धर्मनिरपेक्ष” शब्द संविधान की आत्मा हैं, जो समानता, न्याय और धर्मनिरपेक्षता की बात करते हैं।

राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता कैलाश यादव ने इसे “संविधान विरोधी” करार देते हुए कहा कि ये शब्द देश की सामाजिक एकता और बहुजन हितों की रक्षा करते हैं। एनसीपी सांसद सुप्रिया सुले ने भी कहा कि संविधान में हर शब्द सोच-समझकर जोड़ा गया है, और इसे बदलने की मांग गलत है।

विपक्ष का तर्क है कि ये शब्द भारत की विविधता और समावेशी संस्कृति को मजबूत करते हैं। खासकर “धर्मनिरपेक्षता” शब्द सभी धर्मों के प्रति समानता सुनिश्चित करता है, जो भारत जैसे बहु-धार्मिक देश के लिए जरूरी है। समाजवादी शब्द गरीबों और वंचितों के लिए कल्याणकारी नीतियों को बढ़ावा देता है। विपक्ष का आरोप है कि इन शब्दों को हटाने की मांग बीजेपी और आरएसएस की हिंदू राष्ट्र की विचारधारा को बढ़ावा देने की कोशिश है।

5. क्या है इस विवाद का असली मायना?

इस विवाद को समझने के लिए हमें कई कोणों से सोचना होगा। पहला, यह सवाल कि क्या संविधान की प्रस्तावना को बदलना संभव है? धनखड़ का कहना है कि प्रस्तावना संविधान की आत्मा है और इसे बदला नहीं जा सकता। लेकिन 1976 में यह बदलाव हुआ, तो क्या इसे फिर से बदला जा सकता है? कानूनी जानकारों का कहना है कि संविधान में संशोधन का अधिकार संसद को है, लेकिन यह संशोधन संविधान की मूल संरचना को नुकसान नहीं पहुंचा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने 1973 के केशवानंद भारती मामले में यह साफ किया था कि धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद संविधान की मूल संरचना का हिस्सा हैं।

दूसरा, इस विवाद में आपातकाल की भूमिका। होसबाले और धनखड़ दोनों ने आपातकाल को “लोकतंत्र का सबसे काला दौर” बताया। उनके मुताबिक, उस समय के हालात में किए गए बदलाव संविधान की मूल भावना के खिलाफ थे। लेकिन विपक्ष का कहना है कि ये शब्द भारत की जरूरतों को पूरा करते हैं और इन्हें हटाने की

मांग राजनीतिक अवसरवाद है।

तीसरा, इस बहस का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव। भारत एक ऐसा देश है, जहां कई धर्म, जातियां और संस्कृतियां एक साथ रहती हैं। “धर्मनिरपेक्षता” शब्द यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी धर्म राज्य का पक्षपात न करे। अगर इसे हटाया गया, तो क्या यह देश की धर्मनिरपेक्ष छवि को कमजोर करेगा? वहीं, “समाजवादी” शब्द सामाजिक और आर्थिक समानता की बात करता है। इसे हटाने से कल्याणकारी योजनाओं पर क्या असर पड़ेगा?

चौथा, इस विवाद का राजनीतिक कोण। बिहार में 2025 के विधानसभा चुनाव से पहले यह मुद्दा गरमा गया है। विपक्ष, खासकर राजद और कांग्रेस, इसे बीजेपी के खिलाफ एक बड़ा हथियार बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उनका कहना है कि बीजेपी और आरएसएस संविधान को कमजोर करना चाहते हैं, जो लोकसभा चुनाव 2024 में भी एक बड़ा मुद्दा था।

निष्कर्ष: बहस या बदलाव?

यह विवाद केवल दो शब्दों का नहीं, बल्कि भारत की पहचान और संविधान की आत्मा का है। होसबाले और धनखड़ के बयानों ने एक जरूरी सवाल उठाया है: क्या संविधान की प्रस्तावना को बदला जाना चाहिए, या इसे वैसे ही रखना चाहिए? एक तरफ, आरएसएस और उनके समर्थक मानते हैं कि ये शब्द आपातकाल की देन हैं और इन्हें हटाना संविधान को उसकी मूल शुद्धता में लाया जा सकता है। दूसरी तरफ, विपक्ष का कहना है कि ये शब्द भारत की विविधता और समानता की रक्षा करते हैं।

यह बहस हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेज है, या यह देश की सामाजिक और सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक है? इस मसले पर खुली और निष्पक्ष बहस की जरूरत है, ताकि हर पक्ष अपनी बात रख सके। लेकिन यह भी जरूरी है कि इस बहस को राजनीतिक रंग न दिया जाए, क्योंकि संविधान हर भारतीय का है, न कि किसी एक विचारधारा का।

क्या चांद से बदबू आती है?

NASA के खुलासे ने सबको चौंका दिया!

@ मोहित प्रजापति

काली स्याह रात में रोशनी बिखेरता चांद। वह चांद जिसकी तारीफ में कितने ही कसीदे पढ़े गए। कविताएं लिखी गईं। प्रेमिकाओं के चेहरों की तुलना की गई।

जिस चांद को हम और आप तकते हैं, निहारना पसंद करते हैं, उसके बारे में कुछ वियर्ड सा पता लगे तो क्या होगा? अगर आपको पता चले कि उसी चांद से स्मेल आती है, तो आपका रिएक्शन क्या होगा? नहीं नहीं, यूँ ही चांद को बदबूदार बताकर हम भाग नहीं रहे। पर चांद की अनोखी गंध की कहानी आप तक लेकर आए हैं। मिट्टी में सने जूते जैसे घर गंदा कर देते हैं, चांद की गंध का पता भी लगभग इसी तरह लगा था। जब अपने स्पेस सूट्स और जूतों में चांद की मिट्टी लिए एस्ट्रोनॉट्स स्पेसक्राफ्ट में लौटे थे।

यस, मून हैज़ अ स्मेल, डिअर फ्रेंड्स। तो बात यह है कि चांद की मिट्टी की अपनी एक खास महक होती है। अगर हम अपोलो मिशन में चांद पर गए किसी भी अंतरिक्ष यात्री से पूछेंगे कि चांद की मिट्टी कैसी महक देती है, तो सबका जवाब लगभग एक जैसा मिलेगा। हमें यह कैसे पता चला? वीडियो देखते रहिए, आपको भी पता चल जाएगा।

1969 से लेकर 1972 के बीच नासा के छह अपोलो मिशंस चांद पर गए। इनमें कुल 12 अंतरिक्ष यात्रियों ने चांद की धूल भरी सतह पर कदम रखा।

इन 12 लोगों को मजाक में डस्टी डजन, यानी धूल से सने बारा कहा जाने लगा। जब यह यात्री चांद की सतह पर घूमकर वापस अपने लूनर लैंडर, यानी चांद पर उतरने वाले यान में लौटे, तो उनके सूट्स और जूतों के साथ चांद की मिट्टी भी अंदर आई। और जब उन्होंने अपने हेलमेट्स उतारे, तो पहली बार उन्हें एहसास हुआ। चांद की मिट्टी की अपनी गंध है।

चांद की मिट्टी से गंध आती है। यह बात खुद अपोलो 17 के अंतरिक्ष यात्री और वैज्ञानिक हरिसन जैक स्मिथ ने साझा की। उनका कहना था, “हम सबको एक ही बात महसूस हुई, जैसे किसी बंदूक को चलाने के बाद जो बारूद की गंध आती है, वही महक थी।” ना तो वो तेजाब जैसी थी, ना ही धातु जैसी।

बल्कि बिल्कुल जले हुए बारूद जैसी। शट ने आगे बताया कि जब उन्होंने हेलमेट हटाया और मिट्टी की गंध सूंघी, तो उन्हें यह महसूस हुआ कि यह गंध किसी केमिकल रिएक्शन की वजह से है, जैसे बारूद में होता है। उन्होंने कहा, “हवा आने के 7 मिनट बाद जाकर मैंने गंध महसूस की।”

टेनिस यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर लैरी टेलर, जो अपोलो 17 मिशन में नासा के वैज्ञानिक सलाहकार थे, उन्होंने भी यही बात मानी। उन्होंने बताया कि जो गंध अंतरिक्ष यात्रियों ने महसूस की थी, वो दरअसल चांद की धूल के बहुत सक्रिय कणों से आई थी। उन्होंने कहा कि जब हम धरती पर पत्थर तोड़ते हैं, तब भी थोड़ी गंध आती है, क्योंकि पत्थर के अंदर के खनिज टूटते हैं और कुछ डेंगलिंग बॉन्ड्स, यानी अधूरे केमिकल बॉन्ड्स बन जाते हैं। चांद की मिट्टी में भी ऐसे अधूरे बॉन्ड्स मौजूद होते हैं, खासकर ऑक्सीजन के। क्योंकि चांद की मिट्टी में करीब 43% ऑक्सीजन होती है। जी हां, 43%। जैसे ही चांद की धूल यान के अंदर हवा और नमी के संपर्क में आई, तो वो बॉन्ड्स तुरंत फॉर्म हो गए और उसी वजह से ये अजीब सी महक निकली।

अपोलो 11 के पायलट बज़ ओल्ड्रिन ने भी चांद की मिट्टी की गंध को याद करते हुए कहा था, “यह महक जले हुए कोयले जैसी थी।”

या जैसे राख में थोड़ा पानी डाल दे, तो जो गंध आती है। उन्होंने बताया कि जब वो और नील आर्मस्ट्रांग चांद से वापस अपने लैंडर ईगल में आए, तो उनके सूट्स चांद की धूल से भरे हुए थे। उस धूल से भी, गेस व्हाट, वही

गंध आ रही थी।

चांद पर जाने से पहले कुछ वैज्ञानिकों को डर था कि चांद की मिट्टी खतरनाक हो सकती है। कुछ लोगों ने तो कहा कि यह अपने आप आग पकड़ सकती है, क्योंकि वो कई सालों से ऑक्सीजन से बिल्कुल दूर थी। इसलिए ओल्ड्रिन और आर्मस्ट्रांग ने एक छोटा सा टेस्ट किया। आर्मस्ट्रांग ने चांद से जल्दी-जल्दी में एक मिट्टी का नमूना अपनी पॉकेट में रख लिया। इसे गैब सैंपल कहा गया। उन्होंने इसे यान के अंदर एक फ्लैट सतह पर रखा और देखा कि जैसे-जैसे यान के अंदर ऑक्सीजन भरती गई, क्या मिट्टी धुएं या आग का कोई संकेत देती है? अगर कुछ भी खतरनाक होता, तो वे तुरंत हवा निकालकर नमूना बाहर फेंक देते।

लेकिन ऐसा कुछ हुआ ही नहीं। मिट्टी पूरी तरह स्टेबल रही।

नासा के वैज्ञानिक डॉनल बोनार्ड के मुताबिक, कॉर्नल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर थॉमस गोल्ड पहले व्यक्ति थे जिन्होंने चेतावनी दी थी कि चांद की मिट्टी में आग पकड़ने की संभावना हो सकती है। नासा ने अपोलो 11 से पहले इस विषय पर गंभीर चर्चा भी की थी। हालांकि प्रोफेसर गोल्ड की बात पूरी तरह सही नहीं थी, लेकिन उन्होंने सही पहचाना था कि चांद की मिट्टी काफी रिएक्टिव होती है। यानी तेजी से केमिकली रिएक्ट कर सकती है, खासकर जब वो पहली बार ऑक्सीजन से मिलती है।

आज भी वैज्ञानिक पूरी तरह समझ नहीं पाए हैं कि चांद की मिट्टी की महक आखिर क्यों वैसी होती है, जैसी एस्ट्रोनॉट्स को महसूस हुई। लेकिन एक बात तो तय है। वो गंध इतनी अनोखी और अजीब थी कि हर अंतरिक्ष यात्री उसे कभी भूल ही नहीं पाया। कोई कहता है जली हुई बंदूक की गंध। कोई कहता है राख पर पानी जैसी गंध। और वैज्ञानिक कहते हैं। यह चांद की केमिकल कहानी है, जो धरती पर नहीं दोहराई जा सकती।

बहाना ढूँडते रहते हैं कोई रोने का

बहाना ढूँडते रहते हैं कोई रोने का
रुमें ये शौक है क्या आस्तीं भिगोने का

अगर पलक पे है मोती तो ये नहीं काफ़ी
हुनर भी चाहिए अल्फ़ाज़ में पिरोने का

जो फ़सल ख़्वाब की तय्यार है तो ये जानो
कि वक़्त आ गया फिर दर्द कोई बोलने का

ये ज़िंदगी भी अज़ब कारोबार है कि मुझे
ख़ुशी है पाने की कोई न रंज ख़ोने का

है पाश पाश मगर फिर भी मुस्कुराता है
वो चेहरा जैसे हो दूटे हुए खिलौने का

दर्द के फूल भी खिलते हैं बिखर जाते हैं

दर्द के फूल भी खिलते हैं बिखर जाते हैं
ज़ख्म कैसे भी हों कुछ रोज़ में भर जाते हैं

रास्ता रोके खड़ी है यही उलझन कब से
कोई पूछे तो कहें क्या कि किधर जाते हैं

छत की कड़ियों से उतरते हैं गिरे ख़्वाब मगर
मेरी दीवारों से टकरा के बिखर जाते हैं

नर्म अल्फ़ाज़ भली बातें मोहज़ज़ब लहजे
पहली बारिश ही में ये रंग उतर जाते हैं

उस दरीचे में भी अब कोई नहीं और हम भी
सर झुकाए हुए चुप-चाप गुज़र जाते हैं



जावेद अख्तर

(बॉलीवुड स्क्रिप्ट-लेखक, गीतकार और शायर)

ये तसल्ली है कि हैं नाशाद सब

ये तसल्ली है कि हैं नाशाद सब
में अकेला ही नहीं बर्बाद सब

सब की ख़ातिर हैं यहाँ सब अजनबी
और कहने को हैं घर आबाद सब

भूल के सब रंजिशें सब एक हैं
मैं बताऊँ सब को होगा याद सब

सब को दा'वा-ए-वफ़ा सब को यक़ीं
इस अदाकारी में हैं उस्ताद सब

शहर के हाकिम का ये फ़रमान है
क़ैद में करलाएँगे आज़ाद सब

चार लफ़्ज़ों में कहो जो भी कहो
उस को कब फ़ुर्सत सुने फ़रियाद सब

तलख़ियाँ कैसे न हूँ अशआ'र में
हम पे जो गुज़री रुमें है याद सब

मिल गई कुंडली, पर क्या दिल भी मिले? शादी, शास्त्र और समाज की टकराहट

आज के समय में रिश्तों की नींव पर कई सवाल खड़े हो रहे हैं। क्या प्यार जरूरी है या कुंडली? क्या इंटरकास्ट शादी समाज के लिए चुनौती है या बदलाव की शुरुआत? इस विशेष संवाद में हमने विवाह, कुंडली, जाति व्यवस्था और आधुनिक रिश्तों पर एक सजीव चर्चा की है। यह साक्षात्कार सिर्फ एक सामाजिक विषय नहीं, बल्कि हर परिवार, हर युवा और हर अभिभावक के सोचने का विषय है। पढ़िए और सोचिए क्योंकि आज रिश्ते समझाते से नहीं, समझ से टिकते हैं।

यदि कुंडली मिलती हो, लेकिन आपसी प्रेम न हो, तो क्या शादी करनी चाहिए?

नहीं, बिल्कुल नहीं। कुंडली मिलान महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन यदि दोनों के बीच प्रेम, समझ और आपसी भावनात्मक जुड़ाव न हो, तो शादी नहीं करनी चाहिए। कुंडली में भी स्पष्ट लिखा गया है कि यदि माता-पिता तक विवाह से सहमत न हों, तो शादी टाल देनी चाहिए। प्यार जरूरी है – वही रिश्ते को टिकाऊ बनाता है।

आज के समय में रिश्ते क्यों नहीं टिकते? क्या इसका कारण कुंडली न मिलना है?

आजकल तलाक और रिश्तों में दरार बहुत आम हो गई है। लोग कुंडली मिलाते हैं, गुण मिलाते हैं, लेकिन फिर भी रिश्ते टूटते हैं। असल बात ये है कि सिर्फ कुंडली का मिलना काफी नहीं है।

मैं अपनी ही बात करूँ कि मेरी और मेरी पत्नी की कुंडली में सिर्फ 11 गुण मिलते हैं, जबकि 6 दोष भी थे। लेकिन आज हमारी शादी को 45 साल हो

गए हैं और हम बेहद खुश हैं। दो बच्चे हैं, वे अपने जीवन में सफल हैं।

इससे पता चलता है कि कुंडली नहीं, रिश्ते को निभाने का नजरिया जरूरी है।

तो आपके हिसाब से क्या शादी 'समझौता' है या कुछ और?

शादी समझौता नहीं, बलिदान है। एक लड़का और एक लड़की, जो दो अलग-अलग वातावरण में पले-बढ़े हैं – खाना, पहनावा, सोच, संस्कार – सब अलग होता है। फिर उन्हें एक साथ जीवन बिताना होता है। ऐसे में केवल समझौदारी, बलिदान और सामंजस्य ही रिश्ता निभा सकता है। समानताएं होनी जरूरी हैं, लेकिन उससे भी जरूरी है कि जब मतभेद हों, तो वे संवाद और समझ के जरिए सुलझें।

तो क्या झगड़ा रिश्ते का हिस्सा है?

बिल्कुल। जब तक झगड़े नहीं होंगे, तब तक दोस्ती

भी नहीं होगी। डिफरेंसेज यानी मतभेद जरूरी हैं। लेकिन वो चर्चा और संवाद के जरिए सुलझने चाहिए। हर रिश्ता एक प्रक्रिया है, बहस से समाधान, और समाधान से मजबूत बंधन बनता है।

आज के युवाओं को रिश्तों में सबसे बड़ी गलती क्या लगती है?

आज के दौर में तीन सबसे बड़ी समस्याएं हैं। ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार। काम, क्रोध, लोभ, मोह। ये ऋषियों तक के नहीं गए। लेकिन अगर कोई रिश्ता टूटता है, तो अक्सर वजह होती है 'मैं बड़ा' या 'मेरा खानदान बड़ा'। जब तक हम एक-दूसरे को बराबरी से नहीं देखेंगे, रिश्ते नहीं टिकेंगे।

इंटरकास्ट मैरिज को लेकर आप क्या सोचते हैं?

मुझे जाति-पाति से कोई फर्क नहीं पड़ता। विवाह में व्यक्ति का वर्तमान कर्म, उसका स्वभाव और उसकी सोच मायने रखती है, न कि उसका

जातिगत परिचय। आज भी समाज में इंटरकास्ट मैरिज को लेकर टकराव है – मेट्रो शहरों में भी। लेकिन सच यह है कि जाति व्यवस्था हमारे समाज में जबरन थोपी गई थी। 1526 के बाद बाबर और मुगलों ने हिंदुओं के बीच जातिगत भेदभाव को बढ़ावा दिया – जिससे सामाजिक फूट पड़ी। जिन लोगों को आज समाज 'नीच जाति' मानता है, असल में वे कभी उच्च कुल से थे, उन्हें जबरदस्ती पेशे बदलने को मजबूर किया गया।

तो जाति की बजाय किस बात पर रिश्ता तय करना चाहिए?

जाति नहीं, कर्म देखिए। आपका रिश्ता इस पर निर्भर होना चाहिए कि सामने वाला इंसान आज कैसा है – उसका आचरण, व्यवहार, सोच और संस्कार क्या हैं। जब तक हम जातियों के पुराने खांचों से बाहर नहीं निकलेंगे, तब तक समाज और परिवार दोनों का एकीकरण नहीं हो पाएगा।

बिहार चुनाव 2025

सियासी जंग का माहौल और विश्लेषण

बिहार में 2025 के विधानसभा चुनाव की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। यह चुनाव न सिर्फ बिहार की सियासत के लिए, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति के लिए भी अहम होने वाला है। नीतीश कुमार की अगुवाई में एनडीए और तेजस्वी यादव के नेतृत्व में इंडिया गठबंधन (पहले महागठबंधन) के बीच कांटे की टक्कर होने की उम्मीद है। इसके अलावा, प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी और अन्य छोटे दल भी मैदान में हैं, जो इस बार के चुनाव को और रोमांचक बना रहे हैं। यह लेख बिहार चुनाव 2025 के ताजा अपडेट्स, राजनीतिक रणनीतियों, मतदाता सूची विवाद, और जनता के मूड का विश्लेषण करता है। आइए, इस सियासी जंग को चार हिस्सों में समझते हैं।

सियासी मैदान: कौन किसके खिलाफ?

बिहार के विधानसभा चुनाव 2025 में 243 सीटों के लिए अक्टूबर या नवंबर में वोटिंग होने की संभावना है। भारत निर्वाचन आयोग ने संकेत दिए हैं कि यह चुनाव दो से तीन चरणों में होगा, ताकि दिवाली (20 अक्टूबर) और छठ पूजा (25-28 अक्टूबर) के बाद वोटिंग हो सके। नीतीश कुमार की जनता दल (यूनाइटेड) और बीजेपी के नेतृत्व वाला एनडीए गठबंधन सत्ता में है और इसे बचाने की पूरी कोशिश करेगा। दूसरी तरफ, तेजस्वी यादव की राष्ट्रीय जनता दल (RJD), कांग्रेस, और अन्य दलों के साथ इंडिया गठबंधन सत्ता हासिल करने के लिए जोर लगा रहा है।

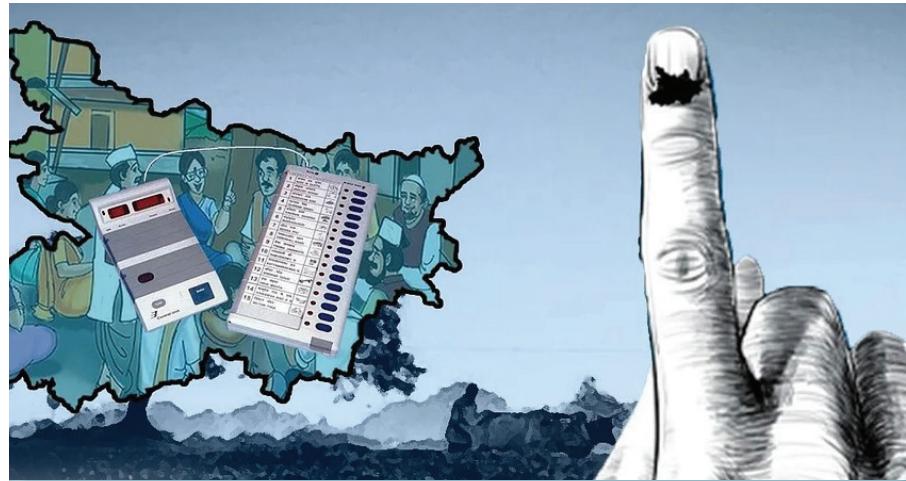
इस बार एक नया खिलाड़ी भी मैदान में है—प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी। प्रशांत किशोर ने ऐलान किया है कि उनकी पार्टी सभी 243 सीटों पर लड़ेगी, जिसमें कम से कम 40 सीटों पर महिला उम्मीदवार होंगी। यह कदम बिहार की सियासत में नया रंग ला सकता है, खासकर युवा और महिला वोटर्स को लुभाने के लिए। वहीं, स्वाधीनता पार्टी ने भी सहरसा, मधेपुरा, सुपौल, और खगड़िया की 17 सीटों सहित कुल 50 सीटों पर लड़ने का ऐलान किया है।

एनडीए ने नीतीश कुमार को ही अपना चेहरा घोषित किया है। डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने साफ कहा कि “नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही चुनाव लड़ा जाएगा।” दूसरी तरफ, RJD सुप्रीमो लालू प्रसाद ने तेजस्वी यादव को CM बनाने की अपील की है और कहा कि “नीतीश और RSS को बाहर करना होगा।” इससे साफ है कि दोनों गठबंधन अपनी-अपनी रणनीति के साथ पूरी ताकत से मैदान में उतर रहे हैं।

चुनावी सर्वे में एनडीए को बढ़त दिखाई जा रही है, लेकिन नीतीश कुमार की लोकप्रियता में कमी की बात भी सामने आ रही है। तेजस्वी यादव ने अपनी सरकार के दौरान नौकरियां देने, 65% आरक्षण, और जातिगत जनगणना जैसे मुद्दों को उठाकर वोटर्स को लुभाने की कोशिश की है। लेकिन क्या ये मुद्दे जनता को प्रभावित करेंगे, यह देखना बाकी है।

मतदाता सूची विवाद: साजिश या पारदर्शिता?

चुनाव से पहले मतदाता सूची का पुनरीक्षण एक बड़ा मुद्दा बन गया है। भारत निर्वाचन आयोग ने 30 सितंबर



जनता का मूड: क्या चाहता है बिहार?

बिहार का वोटर हमेशा से समझदार रहा है। 2020 के चुनाव में नीतीश कुमार की JDU को 71 और RJD को 80 सीटें मिली थीं, लेकिन गठबंधन की वजह से NDA ने सरकार बनाई। इस बार जनता के सामने कई मुद्दे हैं—बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, और बुनियादी ढांचा। तेजस्वी यादव ने बेरोजगारी और गरीबी पर फोकस किया है, जबकि नीतीश सरकार अपने विकास कार्यों और बिहार में स्थिरता का दावा कर रही है।

प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने तीसरे विकल्प की संभावना को मजबूत किया है। X पर कुछ यूजर्स का कहना है कि PK की वजह से निर्दलीय या छोटे दलों के जीतने की संभावना कम हो गई है। वहीं, CPI के डी. राजा ने दावा किया कि नीतीश और BJP की हार तय है, क्योंकि जनता उनके “नाकाम” शासन से तंग आ चुकी है।

बिहार में 32% वोटर ऐसे हैं जो न तो NDA को और न ही इंडिया गठबंधन को वोट देते हैं। ये वोटर प्रशांत किशोर या मुकेश सहनी जैसे नेताओं की तरफ जा सकते हैं। जातिगत समीकरण भी अहम होंगे। RJD का यादव-मुस्लिम वोट बैंक मजबूत है, लेकिन गैर-यादव OBC और सर्वर्ण वोटर्स को लुभाना उनके लिए चुनौती है।



2025 तक मतदाता सूची को अपडेट करने का लक्ष्य रखा है। बिहार में 7.89 करोड़ मतदाता हैं, जिनमें से 4.96 करोड़ के नाम 2003 से सूची में हैं। इन मतदाताओं को सिर्फ अपनी जानकारी वेरिफाई करनी है। आयोग ने 5.74 करोड़ मोबाइल नंबरों पर SMS भेजकर लोगों को जागरूक करने की कोशिश की है।

लेकिन इस प्रक्रिया पर विपक्ष, खासकर तेजस्वी यादव, ने सवाल उठाए हैं। तेजस्वी ने इसे “गरीबों, पिछड़ों, और अल्पसंख्यकों के वोट काटने की साजिश” बताया है। उनका कहना है कि 25 दिनों में 8 करोड़ लोगों की वोटर लिस्ट बनाना नामुमकिन है, खासकर जब बाढ़ से प्रभावित बिहार में गरीबों के पास दस्तावेज नहीं हैं। RJD ने इसे लोकतंत्र और संविधान पर हमला करार दिया और कानूनी लड़ाई की धमकी दी है।

वहीं, चुनाव आयोग ने कहा कि यह प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी है और हर योग्य नागरिक को वोट का अधिकार देने के लिए की जा रही है। आयोग ने एक इंटीग्रेटेड डैशबोर्ड शुरू करने की भी योजना बनाई है, जिससे वोटर्स, अधिकारियों, और दलों को सभी जानकारी एक

जगह मिल सके। इस विवाद ने सियासत को और गरमा दिया है, और यह देखना होगा कि इसका असर वोटर्स के भरोसे पर पड़ता है या नहीं।

रणनीतियां और मुद्दे: कौन जीतेगा जनता का दिल?

चुनावी रणनीतियों की बात करें तो एनडीए और इंडिया गठबंधन दोनों ही अलग-अलग मुद्दों पर फोकस कर रहे हैं। एनडीए ने “मिशन 225” का टारगेट रखा है, यानी 243 में से 225 सीटें जीतने का दावा। JDU ने विधानसभा स्तर पर कार्यकर्ता सम्मेलन शुरू किए हैं, ताकि कार्यकर्ताओं में जोश भरा जाए और नीतीश सरकार के कामकाज को जनता तक पहुंचाया जाए। बीजेपी ने भी 15 जून से विधानसभा स्तर पर सम्मेलन शुरू करने का प्लान बनाया है, जिसमें जातिगत समीकरण और “ऑपरेशन सिंदूर” जैसे मुद्दों पर फोकस होगा।

वहीं, इंडिया गठबंधन ने भी अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। तेजस्वी यादव ने नीतीश सरकार पर नौकरियों, शिक्षा, और बुनियादी ढांचे के मुद्दे पर निशाना साधा है।

उन्होंने अपनी सरकार के 17 महीनों के काम को गिनाया, जैसे 5 लाख नौकरियां देना और 65% आरक्षण लागू करना। कांग्रेस इस बार गैर-यादव पिछड़ी जातियों और सर्वर्ण वोटर्स को लुभाने की कोशिश में है, ताकि RJD की “यादव-मुस्लिम” इमेज से बचा जा सके।

प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी युवाओं और महिलाओं पर फोकस कर रही है। उनकी रणनीति है बिहार को “नई पहचान” देना और कोशी जैसे उपेक्षित इलाकों में रोजगार और विकास के मुद्दे उठाना। मुकेश सहनी की VIP पार्टी भी आरक्षण और पिछड़े वर्गों के हक की बात कर रही है, जो इंडिया गठबंधन के लिए अहम हो सकती है।

चुनावी सर्वे में एनडीए को बढ़त दिख रही है, लेकिन बिहार का चुनाव हमेशा से स्थानीय मुद्दों और जातिगत समीकरणों पर निर्भर रहा है। क्या नीतीश का अनुभव जीतेगा या तेजस्वी की युवा जोश? यह सवाल हर किसी के दिमाग में है।

तकनीक और बदलाव: ई-वोटिंग का नया प्रयोग

बिहार में इस बार चुनाव में तकनीक का बड़ा रोल होने वाला है। बिहार राज्य निर्वाचन आयोग ने 28 जून 2025 को होने वाले नगर निगम और शहरी निकाय चुनावों में ई-वोटिंग सिस्टम लागू करने का ऐलान किया है। यह भारत में अपनी तरह का पहला प्रयोग होगा। इस सिस्टम का टेस्ट विधानसभा चुनाव से पहले हो जाएगा, और अगर यह सफल रहा तो भविष्य में बड़े स्तर पर इस्तेमाल हो सकता है।

चुनाव आयोग ने बूथों की संख्या भी बढ़ा दी है। पहले हर बूथ पर 1500 वोटर थे, अब 1200 वोटर होंगे, जिससे बूथों की संख्या 77,895 से बढ़कर 92,000 हो जाएगी। इसके लिए अतिरिक्त EVM और VVPAT की मांग की गई है। यह बदलाव वोटिंग को और सुगम और पारदर्शी बनाने के लिए है, लेकिन विपक्ष का कहना है कि जल्दबाजी में किए गए ये बदलाव संदेह पैदा करते हैं।

इसके अलावा, मतदाता हेल्पलाइन ऐप और ऑनलाइन फॉर्म की सुविधा से वोटर्स को अपनी जानकारी अपडेट करना आसान हो गया है। लेकिन बाढ़ और गरीबी जैसी समस्याओं के बीच क्या यह तकनीक हर वोटर तक पहुंच पाएगी? यह एक बड़ा सवाल है।

बिहार का भविष्य दांव पर

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 न सिर्फ सियासी दलों के लिए, बल्कि बिहार की जनता के लिए भी एक बड़ा मौका है। नीतीश कुमार का अनुभव, तेजस्वी का जोश, और प्रशांत किशोर का नया विजन—यह सब मिलकर इस चुनाव को रोमांचक बना रहे हैं। मतदाता सूची विवाद और ई-वोटिंग जैसे नए प्रयोगों ने माहौल को और गरमा दिया है। लेकिन आखिर में, जीत उसी की होगी जो बिहार के लोगों का दिल जीतेगा। क्या बिहार में फिर से नीतीश का जादू चलेगा, या तेजस्वी नया इतिहास लिखेंगे? जवाब नवंबर 2025 तक मिलेगा।

अमेरिका का नया डिटेंशन सेंटर क्यों मचा है हंगामा?

अमेरिका में एक नया डिटेंशन सेंटर, जिसे “एलिगेटर अलकाट्राज” के नाम से जाना जा रहा है, हाल के दिनों में खबरों में छाया हुआ है। यह सेंटर फ्लोरिडा के एवरग्लेड्स इलाके में बनाया जा रहा है और इसे लेकर दुनिया भर में बहस छिड़ी हुई है। इसकी वजहें कई हैं—पर्यावरणीय चिंताएं, मानवाधिकारों का सवाल, और अमेरिकी अप्रवासन नीतियों की सख्ती। यह लेख इस विवाद को कई नजरियों से समझने की कोशिश करता है, ताकि आम पाठक को इस मुद्दे की गहराई और जटिलता का पता चल सके।

“एलिगेटर अलकाट्राज” क्या है?

अमेरिका का यह नया डिटेंशन सेंटर फ्लोरिडा के एवरग्लेड्स में बन रहा है, जो एक दलदली और पर्यावरणीय रूप से संवेदनशील इलाका है। इसे “एलिगेटर अलकाट्राज” इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि यह जगह मगरमच्छों और जंगली जानवरों से भरी है, और इसे एक तरह का “जेल द्वीप” माना जा रहा है। इस सेंटर का मकसद अवैध अप्रवासियों को हिरासत में रखना है, खासकर उन लोगों को जो अमेरिका में बिना वैध दस्तावेजों के रह रहे हैं।

यह सेंटर अमेरिकी सरकार की सख्त अप्रवासन नीतियों का हिस्सा है, जिसे खासकर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में और तेज किया गया है। ट्रंप प्रशासन ने अवैध अप्रवासियों को डिपोर्ट करने की प्रक्रिया को तेज करने के लिए कई कदम उठाए हैं, और यह डिटेंशन सेंटर उसी दिशा में एक बड़ा कदम है। लेकिन इसकी लोकेशन और वहां की परिस्थितियों ने कई सवाल खड़े किए हैं।

इस सेंटर में रखे जाने वाले लोग ज्यादातर वे हैं जिन्हें अमेरिका से डिपोर्ट करने की प्रक्रिया चल रही है। हाल ही में, 104 और 116 भारतीय अप्रवासियों को अमेरिकी सैन्य विमान C-17 से भारत वापस भेजा गया, और एक तीसरे विमान में 157 और लोगों को भेजने की खबर है। इनमें से ज्यादातर गुजरात और पंजाब के लोग बताए जा रहे हैं।

पर्यावरणीय चिंताएं: प्रकृति पर खतरा?

इस डिटेंशन सेंटर की सबसे बड़ी विवाद की वजह है इसका फ्लोरिडा के एवरग्लेड्स में बनना। एवरग्लेड्स एक अनोखा पर्यावरणीय क्षेत्र है, जो कई दुर्लभ प्रजातियों का घर है। यहां मगरमच्छ, पक्षी, और कई तरह के जंगली जानवर पाए जाते हैं। पर्यावरणविदों का कहना है कि इस सेंटर का निर्माण इस नाजुक इकोसिस्टम को नुकसान पहुंचा सकता है।

पर्यावरण समूहों ने इस प्रोजेक्ट को रोकने के लिए मुकदमा दायर किया है। उनका तर्क है कि एवरग्लेड्स में निर्माण से पानी की गुणवत्ता खराब हो सकती है, और वहां के वन्यजीवों का जीवन खतरे में पड़ सकता है। एक पर्यावरण कार्यकर्ता ने कहा, “यह सिर्फ एक डिटेंशन सेंटर नहीं, बल्कि प्रकृति के खिलाफ एक हमला है।”

इसके अलावा, इस इलाके में बाढ़ और दलदल की



समस्या भी है, जिसके कारण सेंटर में रहने वालों की सुरक्षा पर भी सवाल उठ रहे हैं। अगर प्राकृतिक आपदा आती है, तो क्या वहां रहने वाले लोग सुरक्षित रह पाएंगे? यह सवाल पर्यावरणविदों के साथ-साथ मानवाधिकार संगठनों को भी परेशान कर रहा है।

मानवाधिकारों का सवाल: क्या हो रहा है गलत?

डिटेंशन सेंटर की दूसरी बड़ी आलोचना मानवाधिकारों को लेकर है। खबरों के मुताबिक, इस सेंटर में हिरासत में लिए गए लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार की शिकायतें आई हैं। उदाहरण के लिए, कुछ डिपोर्ट किए गए भारतीयों ने बताया कि उन्हें हथकड़ियां और बेड़ियां पहनाकर रखा गया, यहां तक कि बाथरूम जाने के दौरान भी।

एक ग्वाटेमाला मूल की मां और उसके चार बच्चों को टेक्सास के ICE डिटेंशन सेंटर में हिरासत में लिया गया, जिनमें से तीन बच्चे अमेरिका में ही पैदा हुए थे। इस तरह के मामले लोगों के बीच गुस्सा पैदा कर रहे हैं, क्योंकि कई लोग मानते हैं कि यह सेंटर सिर्फ अवैध अप्रवासियों को दंडित करने का जरिया बन रहा है।

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने इस मुद्दे पर तीखी टिप्पणी की। उन्होंने कहा, “जब मोदी अपने दोस्त डोनाल्ड ट्रंप से हाथ मिला रहे थे, तब भारतीय नागरिकों

को जंजीरों में बांधकर वापस भेजा जा रहा था। यह ट्रंप का भारत को रिटर्न गिफ्ट है।” यह बयान भारत में भी इस मुद्दे को राजनीतिक रंग दे रहा है।

मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि इस तरह के सेंटर्स में लोगों को बुनियादी सुविधाएं भी नहीं मिल रही हैं। खराब खाना, अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं, और मानसिक तनाव की शिकायतें आम हैं। साथ ही, यह सवाल भी उठ रहा है कि क्या बच्चों को उनके माता-पिता से अलग करना जायज है?

अमेरिकी नीतियों का असर: ट्रंप का नया प्लान?

यह डिटेंशन सेंटर अमेरिका की सख्त अप्रवासन नीतियों का हिस्सा है, जो ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में और तेज हो गई हैं। ट्रंप ने अवैध अप्रवासियों को डिपोर्ट करने का वादा किया था, और इस सेंटर को उसी दिशा में एक कदम माना जा रहा है। प्यू रिसर्च सेंटर के अनुसार, अमेरिका में करीब 7.25 लाख अवैध भारतीय अप्रवासी रहते हैं, जो दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी संख्या है।

ट्रंप प्रशासन ने डिपोर्टेशन की प्रक्रिया को तेज करने के लिए कई सैन्य विमान भेजे हैं। हाल ही में, तीन विमानों में सैकड़ों भारतीयों को वापस भेजा गया। लेकिन इस प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी और अमानवीय व्यवहार

की शिकायतें सामने आई हैं। कई लोगों का कहना है कि डिपोर्ट किए गए लोगों को यह भी नहीं बताया गया कि उन्हें क्यों वापस भेजा जा रहा है।

इसके अलावा, यह सेंटर अमेरिका की विदेश नीति को भी प्रभावित कर रहा है। भारत सरकार इस मामले में अमेरिका से बातचीत कर रही है ताकि डिपोर्ट किए गए लोगों को वापस बसाने में मदद मिल सके। लेकिन कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि यह मुद्दा भारत-अमेरिका संबंधों को तनावपूर्ण बना सकता है, खासकर तब जब भारत में इसे राजनीतिक मुद्दा बनाया जा रहा है।

क्या है आगे का रास्ता?

इस डिटेंशन सेंटर को लेकर बहस अभी खत्म नहीं हुई है। पर्यावरणविद इस सेंटर के निर्माण को रोकने के लिए कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं, जबकि मानवाधिकार संगठन वहां की परिस्थितियों को बेहतर करने की मांग कर रहे हैं। साथ ही, यह सवाल भी उठ रहा है कि क्या इस तरह के सेंटर्स अवैध अप्रवासन को रोकने का सही तरीका है?

कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि अमेरिका को अपनी अप्रवासन नीतियों को और पारदर्शी और मानवीय बनाने की जरूरत है। इसके बजाय कि लोगों को जंजीरों में बांधकर वापस भेजा जाए, उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाना चाहिए। साथ ही, एवरग्लेड्स जैसे संवेदनशील इलाके में सेंटर बनाने के बजाय ऐसी जगहों का चयन करना चाहिए जो पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाएं।

भारत जैसे देशों के लिए भी यह एक सबक है। अवैध अप्रवासन को रोकने के लिए बेहतर नीतियां और जागरूकता की जरूरत है। कई लोग अमेरिका में बेहतर ज़िंदगी की तलाश में जाते हैं, लेकिन वहां की सख्त नीतियों के कारण मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। भारत सरकार को ऐसे लोगों को वापस बसाने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे।

निष्कर्ष: एक जटिल मुद्दा

“एलिगेटर अलकाट्राज” सिर्फ एक डिटेंशन सेंटर नहीं है; यह पर्यावरण, मानवाधिकार, और अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक जटिल मिश्रण है। यह सेंटर अमेरिका की अप्रवासन नीतियों की सख्ती को दिखाता है, लेकिन साथ ही यह सवाल भी उठाता है कि क्या यह नीतियां सही दिशा में हैं? पर्यावरणीय नुकसान और मानवाधिकारों के उल्लंघन की कीमत पर क्या अवैध अप्रवासन को रोका जा सकता है?

यह मुद्दा न सिर्फ अमेरिका, बल्कि भारत और दुनिया के बाकी देशों को भी सोचने पर मजबूर करता है। क्या हम ऐसी दुनिया बनाना चाहते हैं जहां लोग जंजीरों में बंधे हों, या ऐसी दुनिया जहां हर किसी को सम्मान और अवसर मिले? इस सवाल का जवाब समय ही देगा, लेकिन तब तक “एलिगेटर अलकाट्राज” चर्चा का केंद्र बना रहेगा।





प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries